

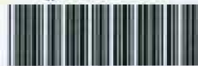
गोल्डी गुम हो गया है! एक सुराग का पीछा करते हुए गोल्डी को नीली कन्दरा के बीच में छलाँग लगाते हुए देखा गया है, ओपल पर सवार होकर अदिति और उसके दोस्त क्यूमे के खूबसूरत पहाड़ी इलाके में पहुँचते हैं। उनकी खोज उन्हें सिबिल, जो सब कुछ जानती है, एक जादुई दर्पण, और भूकम्प पैदा करने वाले, लावा उगलने वाले बदमिज़ाज दैत्य से मिलाती है।

अदिति की साहसिक कथाएँ बच्चों को हर बार दुनिया के किसी नए स्थान की सैर कराती हैं। यह पाँचवी कथा इटली के नज़दीक कैप्री के आसपास घटती है। मगर, अदिति की अन्य साहस कथाओं की तरह, इस किताब का चिरस्थाई आकर्षण भी उसकी परतदार गहराईयों में, सच्ची दोस्ती की सौम्य परख में, असली ताकत और करुणा के बल में है।

सुनीति नामजोशी की पहली पुस्तक *फेमिनिस्ट फेबल्स* 1981 में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें कविता संग्रह भी शामिल हैं। वे डेवन, यू.के. में रहती हैं।

शेफाली जैन चित्रकार हैं जो गुजरात के वडोदरा शहर में रहकर काम करती हैं। वे काफी समय से बच्चों की किताबों के लिए चित्रांकन भी करती रही हैं। इनमें से कुछ हैं: अन्वेषी द्वारा विकसित *मदर* (लेखकः कांचा आइलैया), तूलिका द्वारा प्रकाशित *दस* (हिन्दी-अँग्रेज़ी) जिसका लेखन भी शेफाली ने ही किया है, और यह अदिति श्रृंखला। एकलव्य की बाल पत्रिका *चकमक* में भी उनका सक्रिय योगदान है।

मूल्यः ₹ 50.00



A0140H

ISBN: 978-81-89976-97-2



9 788189 976972



एकलव्य

Tulika

SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित

अदिति और उसके दोस्तों ने किया ज्वालामुखी दैत्य का सामना

सुनीति नामजोशी

चित्रांकनः शेफाली जैन

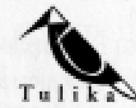
अदिति और उसके दोस्तों ने किया ज्वालामुखी दैत्य का सामना

सुनीति नामजोशी

अँग्रेज़ी से अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

चित्रांकनः शेफाली जैन





एकलव्य व तूलिका
का संयुक्त प्रकाशन

अदिति और उसके दोस्तों ने किया ज्वालामुखी दैत्य का सामना

ADITI AUR USKE DOSTON NE KIYA JWALAMUKHI DAITYA KA SAMANA

सुनीति नामजोशी

अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

चित्रांकनः शेफाली जैन

Originally in English as *Aditi and her Friends take on the Vesuvian Giant*, published by Tulika Publishers in 2007.

मार्च 2011 / 3000 प्रतियाँ

कागज़ः 80 gsm मेपलिथो व 300 gsm आर्ट कार्ड (कवर)

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-81-89976-97-2

मूल्यः ₹ 50.00

एकलव्य व तूलिका का संयुक्त प्रकाशन

सम्पर्क : एकलव्य

ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,

शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मध्य प्रदेश)

फोनः 0755 - 255 0976, 267 1017

फैक्सः 0755 - 255 1108

www.eklavya.in

ईमेलः (सम्पादकीय) books@eklavya.in

(किताबें मँगवाने के लिए) pitara@eklavya.in

मुद्रकः भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन : 0755 - 246 3769

चार जाँबाज़ साथी



अदिति एक साहसी लड़की है जो लड़ाई से नफरत करती है मगर ज़रूरत पड़ने पर साहस की तलवार चला सकती है। अपने तीन जाँबाज़ साथियों, दोनों ड्रैगनों और नाना-नानी से वह दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यार करती है।



सुन्दरी उर्फ **सुन्दर हथिनी** उर्फ **सुन्दर हथि** काफी मशक्कत करती है कि वह सिरिल जैसी तार्किक हो सके। गोल्डी की तरह वह बेहद शक्तिशाली और स्नेहिल है।



सिरिल चींटे को नक्शों, लम्बे-लम्बे शब्दों और अपने दोस्तों से प्यार है। कभी-कभी वह सोचता है कि उसे इतना छोटा नहीं होना चाहिए था।



एक आँख वाली बन्दरिया यानी **बन्दरियाजी** अपने साथियों से उम्र में बड़ी है और इसलिए वह बुद्धिमान व समझदार बनने की बहुत कोशिश करती है।

दो ड्रैगन

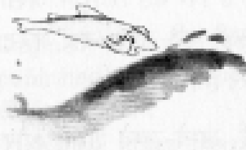


गोल्डी आग उगलने वाला एक समुद्री ड्रैगन है और **ओपल** खूबसूरत व विनम्र नदी ड्रैगन है। जाँबाज़ साथियों को ये दोनों हर जगह उड़ा ले जाते हैं क्योंकि वे उनके दोस्त हैं। आम तौर पर ये दोनों द्वीप संन्यासिन के साथ एक द्वीप पर रहते हैं।



अन्य पात्र

अदिति के नाना-नानी पश्चिमी भारत की एक छोटी रियासत के शासक हैं। अदिति और उसके दोस्तों को उन्होंने साहस की तलवार, अदृश्य करने वाला एक चोगा और थोड़ी जादुई मिट्टी दी है ताकि इनकी मदद से वे अपनी रक्षा कर सकें। चारों जाँबाज़ साथी उनके साथ रहते हैं।



शिशु शार्क अदिति और उसके दोस्तों से पहली बार तब मिला था जब वे द्वीप संन्यासिन का सन्देशा समुद्री संन्यासिन को पहुँचाने गए थे। शिशु शार्क ओपल की बड़ी भक्त है।



तीनों संन्यासिनें तीन ज्ञानी बहनें हैं। जाँबाज़ साथी इनके लिए कभी-कभी अभियान पर जाते हैं। जाँबाज़ साथी भी उनसे मदद माँगने जा सकते हैं। द्वीप संन्यासिन भारत के पश्चिमी तट से कुछ दूर एक द्वीप पर रहती हैं एवं शेरनियों और उनके शावकों से घिरी रहती हैं। समुद्री संन्यासिन ऑस्ट्रेलिया के तट से कुछ दूर ग्रेट बैरियर रीफ पर रहती हैं, और विज्ञानी संन्यासिन कनाडा में एक झील पर रहती हैं।





1
शिशु शार्क

वे बस जगे ही थे और अपना नाश्ता कर रहे थे कि उन्हें उनकी सखी ओपल, नदी ड्रैगन, आकाश में मँडराती नज़र आने लगी। जब ओपल धीमे-धीमे नीचे उतरने लगी तो सिरिल ने गौर किया कि उसके सिर के ठीक ऊपर कोई रुपहली चीज़ तैर रही है।

"अरे, उसने टोपी पहन रखी है!" सुन्दरी अचरज से भरकर बोली।

"ना, मुझे लगता है कि वह कलगी या शिखा है," अदिति बुदबुदाई।

"या फिर आभामण्डल," सिरिल ने जोड़ा। उसने मन ही मन सोचा कि ओपल अद्‌भुत है और हो सकता है कि वह इतनी अच्छी हो कि उसके सिर के इर्द-गिर्द आभामण्डल छा गया हो।

पर जब ओपल धरती पर उतरी और उन्होंने देखा कि वह क्या था, तो उन्हें अपनी आँखों पर भरोसा नहीं हुआ। यह शिशु शार्क था जो ओपल के सिर से दो-तीन फुट ऊपर तिर रहा था और बेहद सुन्दर लग रहा था। उसके शल्क अर्द्ध-पारदर्शी हो गए थे और सीपी की तरह दमक रहे थे। उनके देखते-देखते वह ओपल के सिर से हटा और धीरे से उनकी ओर तैर आया। वह अदिति के पास रुका और वहीं ज़मीन से करीब तीन फुट ऊपर ठहरा रहा।

एक आँख वाली बन्दरिया, अदिति, सिरिल और सुन्दर हथि सुन्दर हथिनी को उनकी तहज़ीब का खयाल आया और उन्होंने गर्मजोशी से ओपल



व शिशु शार्क का अभिवादन किया, और फिर वे खुद पर संयम न रख सके। उन्होंने सवालों की झड़ी लगा दी।

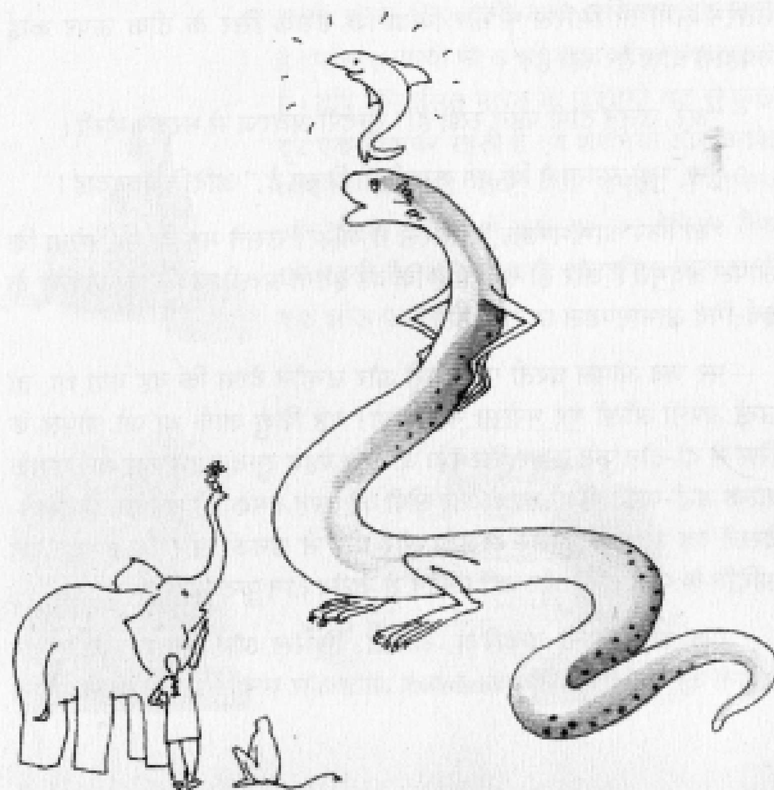
"तुम हवा में कैसे तैर पा रहे हो?" सिरिल जानना चाहता था।

"कितने सुन्दर रंग हैं!" सुन्दरी चीखी? "ये तुमने कैसे बदले?"

"तुम हवा में साँस ले पा रहे हो!" बन्दरियाजी अचरज से बुदबुदाई।

"तुम यह कैसे कर रहे हो?" अदिति ने पूछा।

शिशु शार्क धरती से तीन फुट ऊपर तैरता रहा, पर शिष्टता से उनकी ओर झुका: "पिछली बार मैं तुम सबके साथ आना चाहता था पर मैं हवा में साँस नहीं ले सकता था इसलिए नहीं आ सका। सो मैंने तय किया कि मैं हवा



में साँस लेने की कोशिश करूँगा। मैंने सोचा कि अगर समुद्री संन्यासिन ऐसा कर सकती हैं तो मैं भी कर सकूँगा।"

"पर उनके फेफड़े पहले से थे," अदिति ने टोका।

"हाँ, मैं जानता हूँ," शिशु शार्क ने जवाब दिया, "मुझे अपने फेफड़े उगाने पड़े। समुद्री संन्यासिन ने मेरी मदद की।"

"और फिर क्या हुआ?" उसे अचरज से घूरते हुए सुन्दरी ने पूछा।

"और फिर," शिशु शार्क ने गम्भीर होकर कहा, "मुझे पता चला कि हवा में साँस ले पाने के बावजूद ज़मीन पर चलने का कोई अच्छा तरीका मेरे पास नहीं था।"

"और इसलिए तुम हवा में तैर रहे हो!" सिरिल अचानक बोल पड़ा।

"हाँ," शिशु शार्क ने उत्तर दिया, "यह समुद्री संन्यासिन का तोहफा है। मैं धरती या किसी भी ठोस चीज़ से तीन फुट ऊपर तैर सकता हूँ।"

"और इसीलिए तुम ओपल के सिर के ऊपर तैर रहे थे," अदिति ने कहा।

"हाँ, वह मज़ा लेने के लिए ऐसा कर रहा था," ओपल ने जोड़ा।

"सिरिल ने सोचा तुम्हारे सिर पर आभामण्डल है," सुन्दरी ने ओपल को बताया।

"मैंने ऐसा नहीं सोचा था!" सिरिल ने खीझकर कहा, "वैसे, पल भर को यह विचार मेरे मन में आया था।"

"तुम लगभग पारदर्शी क्यों हो गए हो?" सुन्दरी ने जानना चाहा। "तुम्हारे दमकते रंग बेहद खूबसूरत हैं। क्या तुम अपने रंग बदल सकते हो?"

"अगर बहुत कोशिश करूँ तो मैं अदृश्य हो सकता हूँ, पर थोड़ी-सी देर के लिए ही। यह समुद्री संन्यासिन का एक और तोहफा है। और मैं रंग बदलता भी हूँ।"



"तुम्हारी भावनाओं के अनुसार?" सिरिल ने पूछा।

"नहीं," शिशु शार्क ने कहा, और लगा मानो वह आगे कुछ बताना नहीं चाहता। इसलिए ओपल ने उसकी ओर से समझाते हुए कहा, "जिसके साथ भी यह हो, वह इसके बारे में जैसा महसूस करता है उस हिसाब से इसके रंग बदल जाते हैं। अभी यह हमारे साथ है, और हम इसके दोस्त हैं। इसीलिए इस समय यह खुशी से इतना दमक रहा है।"

ओपल ने एक छोटी शीशी आगे बढ़ाई। "समुद्री संन्यासिन ने तुम लोगों के लिए एक छोटा-सा तोहफा भेजा है," उसने आगे जोड़ा। "उन्होंने कहा है कि तुम इसे अपने प्राथमिक उपचार के बक्से में रख सकते हो।"

शीशी पर साफ अक्षरों में लिखा था 'बड़ा करो'।

"ओह, शुक्रिया," बन्दरियाजी ने शीशी को प्राथमिक उपचार के बक्से में रखते हुए कहा। उसमें पहले से दो शीशियाँ थीं जिनमें से एक पर लिखा था, 'छोटा करो' और दूसरे पर, 'सब कुछ ठीक'। ये शीशियाँ समुद्री संन्यासिन ने उन्हें दी थीं, और साथ में एक और शीशी दी थी 'मुझे ठीक करो' के लेबल वाली, जिसमें बन्दरियाजी के लिए गठिया की दवा थी।



"इसे लाने के लिए धन्यवाद," अदिति ने कहा। "तुम दोनों को देखकर अच्छा लग रहा है। आओ, बैठो।"

"मैं बैठ नहीं सकता," शिशु शार्क बुदबुदाया, "मैं सिर्फ तिर सकता हूँ, पर अब यह मेरे लिए बहुत आसान है, और बैठने से ज़्यादा आरामदेह भी।" इतना कह वह अदिति के सिर से ऊपर की ओर बढ़ा और वहाँ से सुन्दरी के कन्धों पर चक्कर काटने लगा।

सिरिल, जो कुछ देर से चुप था, अचानक उससे पूछ बैठा, "क्या तुम अब भी पानी में तैर सकते हो?"

"हाँ, पहले की तरह ही," शिशु शार्क ने जवाब दिया।

"और पानी में साँस भी ले सकते हो?"

शिशु शार्क ने हामी में सिर हिलाया।

सब प्रशंसा के भाव से उसकी ओर देखने लगे और शिशु शार्क प्यारे-से गुलाबी रंग में झिलमिलाने लगा।

"तुम्हारा रंग बदल गया है," सुन्दरी ने अनावश्यक ही टिप्पणी की।

"मेरे बस में नहीं है," शिशु शार्क ने जवाब दिया। "यह इसलिए हो रहा है क्योंकि तुम सब मेरे बारे में अच्छा-अच्छा सोच रहे हो।"

"कोई तुम्हारे बारे में बुरी-बुरी बातें सोचे तो क्या होता है?" सुन्दरी ने जानना चाहा।

"मुझे पक्का पता नहीं," शिशु शार्क बोला, "पर तुम लोग ओपल और मेरे साथ चलो तो यात्रा के दौरान शायद हमें यह भी पता चल जाएगा।"

"तुम जा कहाँ रहे हो?" अदिति ने पूछा। "और तुम्हारे साथ गोल्डी क्यों नहीं है?"

गोल्डी अग्नि ड्रैगन था जिससे वे अपनी पहली साहसिक यात्रा में मिले थे। वह और ओपल लगभग हमेशा साथ-साथ यात्रा करते थे।



"यही तो परेशानी है," ओपल ने कहा। "गोल्डी गायब है। मैं पहले समुद्री संन्यासिन के पास यह पूछने गई कि क्या उन्हें गोल्डी का अता-पता मालूम है। उन्होंने उसे देखा नहीं था। उन्होंने दुनिया भर के समुद्रों में एक दूरानुभूति-सन्देश भेजा, पर उन्हें किसी सुनहरे ड्रैगन द्वारा एक गहरी नीली कन्दरा में कूद जाने का एक अस्पष्ट-सा जवाब मिला।"

"इसीलिए हम उसे ढूँढ रहे हैं। समुद्री संन्यासिन ने कहा कि मैं ओपल के साथ जाकर उसे तलाशने में मदद कर सकता हूँ," शिशु शार्क ने जोड़ा।

"गोल्डी कब से गुम है?" सुन्दरी ने सवाल किया।

"सिर्फ दो दिनों से," ओपल बोली। "शायद वह अकेले ही छुट्टी मनाने चला गया है और जल्दी ही वापस लौट आएगा।"

"क्या वह बताकर नहीं गया कि वह कहाँ जा रहा है?" एक आँख वाली बन्दरिया ने जानना चाहा।

"पक्की तरह नहीं, बन्दरियाजी। उसने एक सिंह शावक से सिर्फ इतना ही कहा था कि वह किसी दूर के रिश्तेदार से मिलने जा रहा है और शायद थोड़ा घूम-घाम लेगा और जल्दी ही लौट आएगा।"

"गोल्डी तो बहुत विशाल है," सिरिल ने सोचते हुए कहा। "जब तक कि वह बहुत ऊपर न उड़ रहा हो, उसका नज़रों से ओझल होना कठिन होगा।"

"या फिर वह पाताल में न जा छिपा हो," सुन्दरी ने जोड़ा।

"खैर, हमें व्यवस्थित तरीके से उसे ढूँढना होगा। अगर हम देशान्तर रेखाओं के साथ ऊपर-नीचे उड़ें और फिर अक्षांश रेखाओं के सहारे-सहारे, तो हम पूरी दुनिया के चप्पे-चप्पे को देख सकेंगे। लेकिन इसमें समय बहुत लगेगा और ओपल थक जाएगी। पहले हमें और जानकारी इकट्ठी करनी चाहिए," सिरिल ने सोचकर कहा।

इस दौरान अदिति इंटरनेट पर 'नीली कन्दरा' को खोज रही थी। "दुनिया में दर्ज़नों नीली कन्दराएँ हैं: रेस्त्राँ, गुफाएँ, पर्यटकों के आकर्षण," उसने बताया, "पर मुझे लगता है कि सही जगह वेसुवियस के पास कैप्री में है।"

"वेसुवियस!" बन्दरियाजी अचरज से बोल उठीं, "पर वह तो ज्वालामुखी है!"

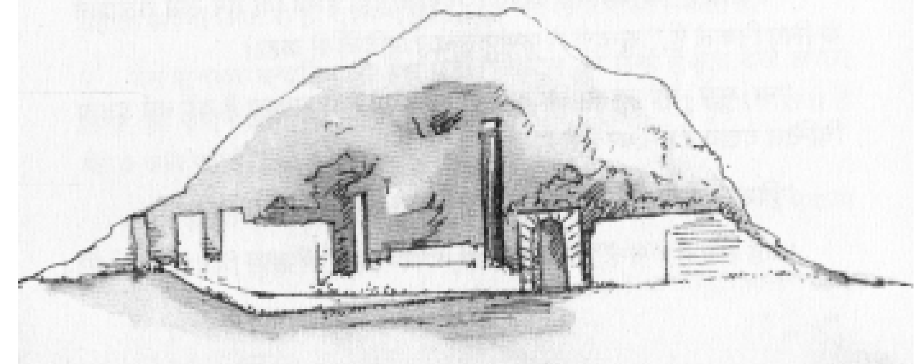
"बिलकुल सही," अदिति ने जवाब दिया, "और इसलिए सम्भव है कि एक आग उगलने वाले ड्रैगन का वहाँ से कोई रिश्ता हो।"

"ओह, यह बहुत तार्किक अनुमान है," सुन्दरी ने गहरी साँस लेते हुए कहा। उसने यह शब्द पिछली साहसिक यात्रा के समय सीखा था जब वे विज्ञानी संन्यासिन के पास गए थे, और उसने तय किया था कि वह एक तार्किक हथिनी बनेगी। शब्द का पूरा मतलब उसे समझ में नहीं आया था। उसे अलग-अलग अवसरों पर बताया गया था कि इसका मतलब विवेकवान, तर्कपूर्ण या समझदार होता है। उसे लगा कि यह तो अच्छी बात है। "चलो उसे ढूँढने चलते हैं," उसने कहा।

"हाँ, चलते हैं," अदिति और सिरिल और बन्दरियाजी ने एक सुर में कहा।

ओपल निश्चिन्त नज़र आई। "क्या तुम कह रहे हो कि तुम सब हमारे साथ चलोगे?"

"बेशक," चारों जाँबाज़ों ने जवाब दिया।



2

मूँगफलियाँ

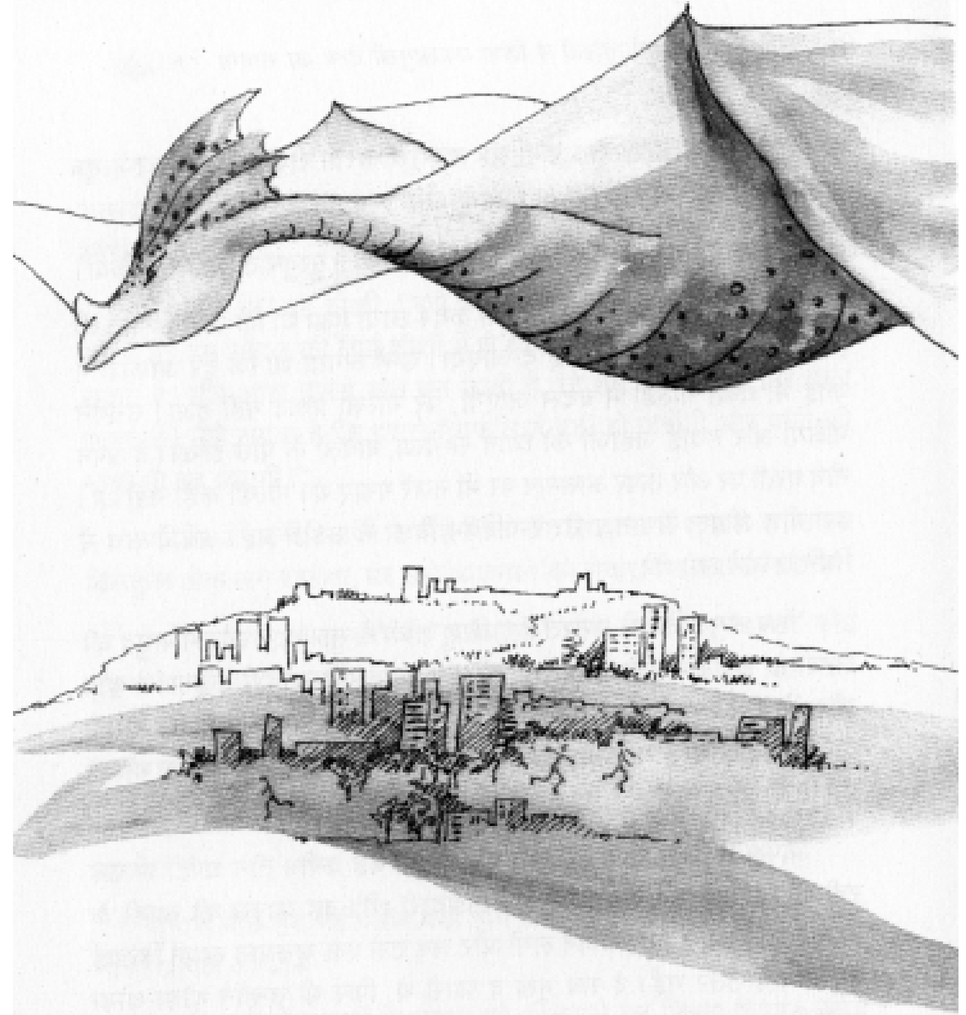
चारों जाँबाज़ दोस्त, शिशु शार्क और ओपल लगभग तुरन्त ही चल पड़े। उन्होंने सुन्दरी का हौदा ओपल की पीठ पर बाँधा। यह हौदा सुन्दरी की पीठ पर सवारी करने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाता था। यह सुन्दरी से काफी बड़ा था और इसलिए बनाया गया था कि वह उसमें बैठकर ड्रैगन की पीठ पर सवारी कर सके और उड़ते समय गिर न पड़े। अदृश्य करने वाला चोगा, साहस की तलवार और प्राथमिक उपचार का बक्सा, हौदे के नीचे बनी एक छोटी दराज़ में पहले ही रख दिए गए थे और अदिति की जेब में सिरिल की माचिस की डिबिया थी जिसमें उसकी जादुई मिट्टी रखी थी। खाने-पीने के सामान के रूप में उन्होंने थोड़ा पानी और कुछ मूँगफलियाँ रखी थीं। उन्हें लगा कि वे अधिक समय के लिए नहीं जा रहे हैं। आसमान में ऊपर उठते समय भी उन्हें लग रहा था कि गोल्डी बस सामने से आता ही होगा।

"उम्मीद है कि वह यह देखकर नाराज़ नहीं होगा कि हम उसे तलाशने के लिए निकले हैं," सुन्दरी ने फुसफुसाकर अदिति से कहा।

"ना, मुझे नहीं लगता कि वह नाराज़ होगा। हो सकता है वह हमें इतना चिन्तित देखकर हम पर हँसे।"

"विशाल ड्रैगन भी मुसीबत में फँस सकते हैं," सिरिल बड़बड़ाया।

"यह सच है," नन्हे शार्क ने जोड़ा, "पर गोल्डी से कौन भिड़ना चाहेगा?



वह तो अपनी छींक से ही दुश्मनों को तिनके की तरह उड़ा सकता है!"

यह सुनकर बन्दरियाजी हँस पड़ीं। सिरिल को उन्हें हँसता देख अच्छा लगा, सो उसने आगे जोड़ा, "या उन्हें घूरकर उनमें यह भाव जगा सकता है कि वे जल रहे हैं!"

"या उनके पास उतरकर उन्हें यह महसूस करवा सकता है कि वे भूकम्प में फँस गए हैं!" सुन्दरी ने बातचीत में शामिल होते हुए कहा।

"या उनके ऊपर उड़ उन्हें यह महसूस करवा सकता है कि सूरज डूब गया है और रात हो गई है!" अदिति ने जोड़ा।

"ओह, इतना बड़ा तो वह नहीं है," बन्दरियाजी ने मुस्कुराते हुए विरोध किया।

उनके दिलो-दिमाग पर वह इस कदर छाया हुआ था कि उन्हें उम्मीद थी कि वह किसी भी पल दिखाई दे जाएगा। उन्हें लगता था कि दूर आकाश में कोई भी धब्बा गोल्डी में बदल जाएगा, पर गोल्डी प्रकट नहीं हुआ। उन्होंने पक्षियों और हवाई जहाज़ों को ध्यान से देखा, बादलों के पीछे झाँका। वे अपने नीचे धरती पर और ऊपर आसमान पर भी नज़रें गड़ाए थे। गोल्डी कहीं नहीं था। इस बीच ओपल लगातार उत्तर-पश्चिम दिशा में उड़ती गई। अब वे सच में चिन्तित होने लगे थे।

"हम समुद्र किनारे उतरते हैं," शिशु शार्क ने सुझाया, "और मैं समुद्र की लहरों के सहारे समुद्री संन्यासिन को एक दूरानुभूति-सन्देश भेजूँगा। वे द्वीप संन्यासिन से सम्पर्क कर लेंगी और इस तरह हमें पता चल जाएगा कि गोल्डी वापस लौट आया है या नहीं। यह भी तो हो सकता है कि किसी कारण गोल्डी हमें दिखा ही न हो।"

ओपल ने शिशु शार्क की बात पर सोचा। वह करीब तीन घण्टों से उड़ रही थी। गोल्डी की खबर लेने में समझदारी थी। वह फारस की खाड़ी के किनारे कोई शान्त तट खोजने लगी और जब उसे एक सुनसान खाड़ी दिखाई दी तो वहाँ उतर गई। वे सब भूखे व प्यासे थे, फिर भी उन्होंने थोड़ा-थोड़ा पानी पिया। उन्होंने सोचा था कि वे जल्द ही गोल्डी से मिल जाएँगे। पर अब लगने लगा था कि वह सच में कहीं खो गया है। शिशु शार्क पानी में उतरा और लहरों के अन्दर समा गया। उसने अपना ध्यान एकाग्र किया और यह सन्देश भेजाः **समुद्री संन्यासिन कृपया ध्यान दें: क्या गोल्डी का कोई समाचार है?**

शिशु शार्क पानी की सतह पर लौटा और तैरकर अपने साथियों के पास आया। "मैंने सन्देश भेज दिया है," उसने कहा। "करीब पन्द्रह मिनट बाद मैं देखूँगा कि कोई जवाब आया है या नहीं।" वे सब बैठकर इन्तज़ार करने लगे।

उन्होंने सोचा कि काश वे अपने साथ थोड़ी-सी मूँगफलियों और पानी के अलावा खाने-पीने का कुछ और सामान लाए होते। अचानक सुन्दरी को एक बात सूझी।

"मुझे पता है!" वह चीखी, "मुझे पता है कि हम और खाना कैसे पैदा कर सकते हैं। हम ओपल की लाई शीशी में से थोड़ा-सा लेप मूँगफलियों पर लगा सकते हैं, और अगर इससे बात बन जाती है, तो हम पानी में भी इसे डाल सकते हैं। मुझे लगता है कि इससे मूँगफलियाँ बड़ी हो जाएँगी और पानी की मात्रा भी बढ़ जाएगी।"

अदिति और बन्दरियाजी ने भौहें सिकोड़ीं। सिद्धान्त में सुन्दरी का उपाय बिलकुल ठीक लग रहा था, पर उसे आज़माने को लेकर वे आश्वस्त नहीं थे।

"कोशिश कर देख लेते हैं," ओपल ने धीरे से कहा। "इससे कोई नुकसान नहीं हो सकता।" इतनी देर तक उड़ते रहने के कारण वह बेहद प्यासी थी, पर साथ लाया पानी उसने बस चखा भर था। उसे पता था कि उसके एक ही घूँट में पूरा पानी खत्म हो सकता है।

"इसे सावधानी से छूना," सिरिल ने चेताया, "नहीं तो तुम और बड़ी हो जाओगी।"

सुन्दरी पीछे हट गई। और बड़ा होने की उसे कतई इच्छा नहीं थी, और ना ही ओपल को थी।

बन्दरियाजी ने सुन्दरी के उपाय को आज़माने का ज़िम्मा लिया। उसने प्राथमिक उपचार बक्से से 'बड़ा करो' की शीशी निकाली और सावधानी से उसका ढक्कन खोला। फिर बहुत धीरे से और सावधानी से उसने एक मूँगफली की नोक उसमें डुबोई। उसने वह मूँगफली एक पत्थर पर रखी और शीशी का ढक्कन बन्द किया। वे सब मूँगफली के इर्द-गिर्द घिर आए और उसे घूरने लगे। पहले-पहल तो कुछ नहीं हुआ, पर फिर उनकी नज़रों के सामने ही मूँगफली का आकार बढ़ने लगा और बढ़ते-बढ़ते वह एक नारियल जितनी बड़ी हो गई।



वे खुश हो गए। ओपल ने अपने पंजों से मूँगफली का छिलका तोड़ा और उन्होंने उसके दाने आपस में बाँट लिए। उन्होंने कुछ और मूँगफलियाँ 'बढ़ाईं' और भरपेट खाईं। इसके बाद उन्होंने मूँगफली के हरेक विशाल छिलके में एक-एक बूँद पानी डाला और सावधानीपूर्वक उसे भी बढ़ाया ताकि उनके पास पीने के लिए पर्याप्त पानी हो और अब ओपल की प्यास भी बुझ गई।

"यह तो बहुत बढ़िया तरकीब थी," बन्दरियाजी ने कहा, "पर भविष्य में हमें अपने साथ खाने-पीने का पर्याप्त सामान लाना चाहिए।"

"तुम्हारी चतुराई है जो तुमने यह बात सोच ली," अदिति ने सुन्दरी से कहा।

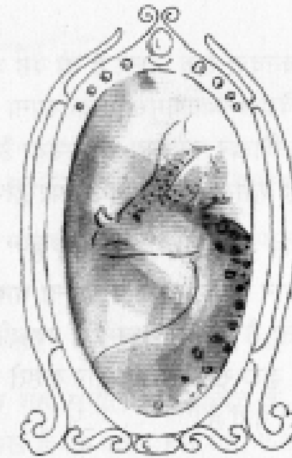
"हाँ," सिरिल ने जोड़ा, "यह पूरी तरह तर्कपूर्ण था।"

सुन्दरी खुशी से दमकने लगी। उसे पता था कि तर्कपूर्ण होना

विचारशील होने का एक तरीका होता है। उसे लगा कि वह तरक्की कर रही है और उसकी कोशिश रंग लाने लगी है।

शिशु शार्क यह पता करने फिर से सागर में उतरा कि समुद्री संन्यासिन ने कोई जवाब दिया है या नहीं। पर लहरों के सहारे उनका जो सन्देश आया वह कुछ उलझाने वाला था। उसमें कहा गया थाः **शिशु शार्क ध्यान दो। गोल्डी को ज्वालामुखी दैत्य ने रुपहले शीशे में कैद कर लिया है। मदद के लिए फौरन जाओ।**

शिशु शार्क ने सबको वह सन्देश कह सुनाया। इसका मतलब तो पूरी तरह से समझ में नहीं आया, पर एक बात साफ थी – गोल्डी मुसीबत में था। वे सब जितनी जल्दी हो सका ओपल की पीठ पर सवार हुए और वह हवा में ऊपर उठ गई। किसी को यह कहने की ज़रूरत ही न पड़ी कि जल्दी करो। वे अपनी राह पर निकल पड़े थे।



३

क्यूमे

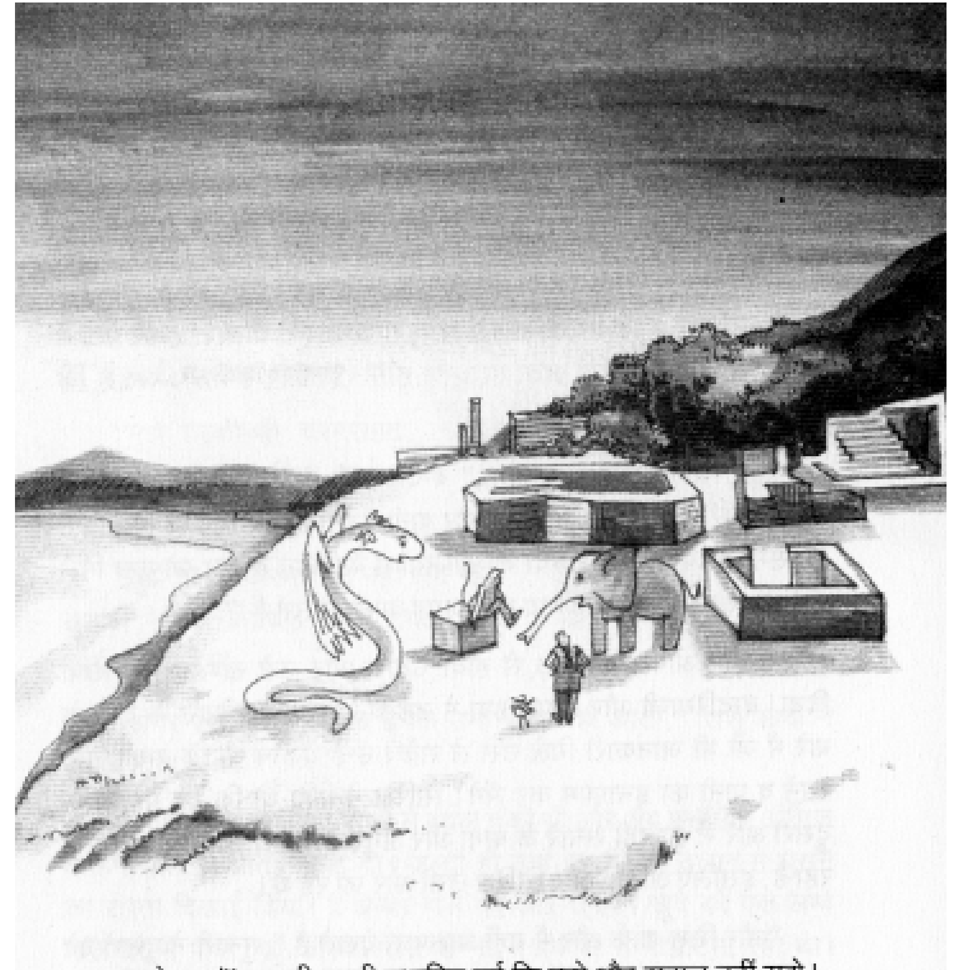
सिरिल बड़े ध्यान से नक्शे को देख रहा था और अदिति इंटरनेट से ली गई जानकारी पढ़ रही थी ताकि यह पता चल सके कि उन्हें किस जगह उतरना चाहिए। गोधूलि का समय था और वे भूमध्य सागर के गहरे नीले पानी के ऊपर उड़ रहे थे। ओपल थक चुकी थी, पर वे अपने गन्तव्य के पास पहुँच गए थे।

"अगर हमें नीली कन्दरा तक जाना है तो वह शायद इस कैप्री द्वीप पर है। और अगर हमें वेसुवियस ज्वालामुखी तक जाना है तो उस बड़े पहाड़ के पास जाना होगा जिसके शिखर पर बड़ा-सा गड्ढा है, जो इस दृश्य पर छाया हुआ है।" सिरिल ने उन्हें बताया। उसने नक्शे पर द्वीप और पहाड़ दिखाया।

"पर इस पूरे इलाके में ढेरों पर्यटक होते हैं," अदिति ने जोड़ा। "हम अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहते। अच्छा है कि अँधेरा होने लगा है। मुझे लगता है कि हमें क्यूमे में पहाड़ी की ढलान पर उतरना चाहिए। वहाँ मन्दिरों के कुछ खण्डहर हैं और कहते हैं सिबिल वहीं रहती है, पर वहाँ ज़्यादा लोग जाते नहीं हैं।"

"सिबिल कौन है?" सुन्दरी ने पूछा।

"वह एक उम्रदराज़ महिला है जो सब कुछ जानती है," अदिति ने जवाब दिया।



"अरे वाह!" सुन्दरी इतनी प्रभावित हुई कि उसे और सवाल नहीं सूझे।

जब ओपल धीमे से पहाड़ी पर खण्डहरों के पास उतरी तब तक अँधेरा घिर चुका था।

"यह कौन सी जगह है?" सुन्दरी ने जानना चाहा।

"मुझे लगता है कि यह अपोलो के मन्दिर के अवशेष हैं," ओपल ने जवाब दिया। "मेरा खयाल है कि अगर हम यहाँ रुकते हैं तो हमें कोई देख नहीं पाएगा।"

वे ओपल की पीठ से उतरे और चारों ओर देखने लगे। जंगल से ढकी पहाड़ी की ढलान निस्तब्ध थी। उनके नीचे शान्त समुद्र पसरा पड़ा था। कोई

दूसरा समय होता तो वे उस जगह के सौन्दर्य को देख अचरज से भर जाते, पर फिलहाल वे बेहद भूखे और प्यासे थे।

"मुझे पता है कि क्या हुआ है!" शिशु शार्क ज़ोर से बोला। "हमारे पेटों में बक़ा-करो लेप का असर खत्म हो चुका होगा, इसलिए हमें लग रहा है कि हमने बहुत कम खाया है।"

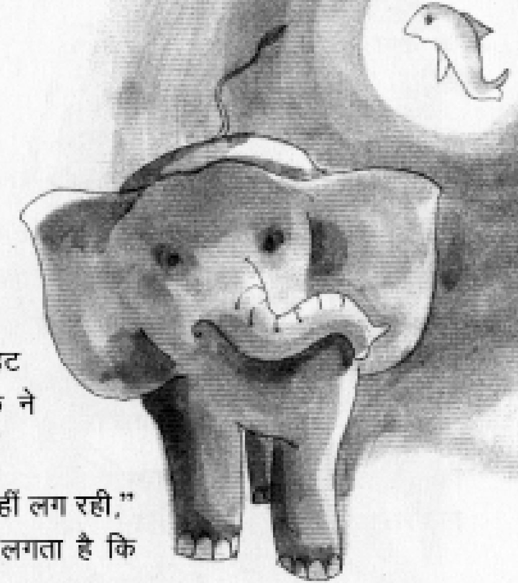
"हाँ, ज़रूर यही हुआ होगा," बन्दरियाजी ने सहमति जताई। "इस समय हमारी प्राथमिकता है खाना और पानी ढूँढना और सम्भव हो तो गोल्डी का समाचार पाना। हम दो-दो की टोलियों में बँट जाते हैं और जो कुछ मिले उसे लेकर ठीक एक घण्टे बाद इसी जगह वापस मिलते हैं।"

उन्होंने ओपल की पीठ से हौदा उतारा और उसे खण्डहरों में छिपा दिया। बन्दरियाजी और ओपल हवा में उड़ चले ताकि वेसुवियस के दैत्य के बारे में जो भी जानकारी मिले उसे ले सकें। उन्हें यकीन था कि बाकी लोग खाने व पानी का इन्तज़ाम कर लेंगे। सिरिल ने कहा था कि वह पहाड़ी के दूसरी ओर से आ रही सन्तरे के बागों और अंगूर के बगीचों की खुशबू सूँघ पा रहा है, इसलिए अदिति और सिरिल उसी ओर जा रहे थे।

"और शिशु शार्क और मैं यहीं आसपास देखते हैं," सुन्दरी ने दूसरों को बताया। "मुझे लगा था कि कहीं से पानी की आवाज़ आ रही है।" यह कहते समय वह ज़रा असहज ढंग से हिली। दरअसल उसने कुछ सुना ज़रूर था, पर वह पानी की आवाज़ नहीं थी। वह किसी के रोने की आवाज़ जैसी लग रही थी, पर उसे पक्का पता नहीं था और वह इस बारे में कुछ कहना नहीं चाहती थी।

सुन्दरी बड़ी सावधानी से ढलान से नीचे उतरने लगी; शिशु शार्क उसके सिर के ऊपर मँडरा रहा था। रोशनी बहुत कम थी, पर शिशु शार्क कोशिश कर रहा था कि वह इतना दमके कि राह नज़र आने लगे।

"हम कहाँ जा रहे हैं?" उसने सुन्दरी से पूछा।



"शश्श। सुनो। क्या तुम यह आवाज़ नहीं सुन रहे? यह हमारे ठीक नीचे से आ रही है," सुन्दरी ने जवाब में कहा।

"मुझे हल्की-सी चरमराहट सुनाई दे रही है," शिशु शार्क ने कहा।

"मुझे तो यह चरमराहट नहीं लग रही," सुन्दरी ने उसे बताया। "मुझे लगता है कि कोई रो रहा है।"

"अगर ऐसा है तो लगता है कि उन्हें रोना नहीं आता," शिशु शार्क ने जवाब दिया।

ढलान अब तक सपाट रास्ते में बदल चुकी थी और अब उन्हें यह आवाज़ दाहिनी ओर से आती सुनाई दी। जल्दी ही उन्हें पहाड़ी की ढलान में घुसने का रास्ता दिखाई दिया। वे अन्दर चले गए और उन्होंने खुद को एक लम्बे गलियारे में पाया, जो फॉस्फॉरेसेंस के मद्धम प्रकाश से टिमटिमा रहा था। गलियारे के अन्त में एक छोटा कक्ष था। चरमराहट की आवाज़ एक छोटी-सी आकृति से आ रही थी, जो कक्ष के बीचोंबीच गुड़ीमुड़ी-सी बैठी हुई थी।

सुन्दरी और शिशु शार्क उस आकृति की ओर बढ़े। ज़ाहिर था कि वह जो भी थी, उसे ये दोनों घुसपैठियों जैसे लगे। उसकी नाराज़गी से शिशु शार्क का रंग स्लेटी नीला हो गया, मगर सुन्दरी ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

"ओह प्लीज़," वह ज़ोर से बोली, "प्लीज़। रोइए मत। क्या बात है? क्या हम आपकी कुछ मदद कर सकते हैं?"

नन्ही आकृति ने खुद को सम्हाला। सुन्दरी और शिशु शार्क अब देख पा रहे थे कि वह बेहद उम्रदराज़ स्त्री थीं। "शायद," सुन्दरी ने मन ही मन तय



किया, "उनकी उम्र हज़ारों साल की है। बेचारी। वह कितनी कमज़ोर और थकी हुई लग रही हैं।" उसने यह सब ज़ोर से नहीं कहा। पर दुर्भाग्य से बूढ़ी स्त्री उसके विचारों को पढ़ सकती थीं।

"खबरदार, मुझ पर दया करने की ज़रूरत नहीं है!" बूढ़ी स्त्री ने फटकारा। "क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ?"

सुन्दरी और शिशु शार्क ने ना में सिर हिलाया।

"तो फिर भला तुम यहाँ आए क्यों हो? लोग यहाँ सिर्फ मुझसे कुछ पूछने ही आते हैं," बूढ़ी स्त्री कुटिलता से मुस्कुराई। "पर मैंने सैकड़ों सालों से किसी को ठीक से जवाब नहीं दिया है।"

बूढ़ी स्त्री ने सुन्दर हथि सुन्दर हथिनी को ध्यान से देखा, जो अब यह सोच रही थी कि शायद उन्हें यहाँ नहीं आना चाहिए था, और शिशु शार्क को जो अब ज़र्द पड़ चुका था।

"हम्म," बूढ़ी स्त्री ने कहा, "पता है, उनके क्या हाल होंगे, भविष्य में उनके साथ क्या होगा, वगैरह पूछने की बजाय पहली बार किसी ने मुझसे पूछा है कि मैं कैसी हूँ। खैर, मैं ठीक हूँ और मैं ठीक नहीं हूँ। मैं बेहद थक चुकी हूँ और इस बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता। पर यह दिखाने के लिए कि मैं भी शिष्ट हो सकती हूँ, मैं तुम्हें ठीक वही बताऊँगी जो तुम जानना चाहते हो।"

"जो हम जानना चाहते हैं?" सुन्दरी अचरज से बुदबुदाई।

बूढ़ी स्त्री ने उनकी ओर तरस भरी नज़र डाली। "क्या तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि तुम्हें क्या जानना है?" उन्होंने तिरस्कारपूर्वक पूछा। पर उत्तर पाने के लिए वह रुकी नहीं।

"सुनो," उन्होंने कहा, "और बीच में टोकना नहीं।"

उनकी आवाज़ सख्त ज़रूर थी, पर शिशु शार्क को लगा कि अब वे नाराज़ नहीं हैं। वह तैरकर नज़दीक गया और उनके दाहिने हाथ के पास आ ठहरा। उसका रंग धीरे-धीरे सामान्य अर्ध-पारदर्शी सफेद होने लगा था। सुन्दरी ने अपने अगले पैर मोड़े और बूढ़ी स्त्री के सामने घुटने टेककर चुपचाप बैठ गई। वह ध्यान से सुनने के लिए तैयार थी; पर ठीक उसी समय उसका पेट गुड़गुड़ाया।

"टोको मत!" बूढ़ी स्त्री ने खीझकर कहा।

"माफ करें," सुन्दरी ने शिष्टता से कहा। "दरअसल हम भूखे हैं, पर मैं अपने पेट को चुप रखने की पूरी कोशिश करूँगी।"

"तो तुम्हें क्या चाहिए," बूढ़ी स्त्री ने पूछा, "खाना या ज्ञान?"

"ज्ञान प्लीज़!" सुन्दरी और शिशु शार्क एक साथ बोल उठे। अब तक दोनों अनुमान लगा चुके थे कि यह प्राचीन स्त्री सिबिल हैं और यह उनका सौभाग्य था कि वे उन्हें ढूँढ सके थे और इससे भी बड़ा सौभाग्य यह था कि वे उनसे बातचीत करने को तैयार थीं।



४

क्या तुम जानना चाहते हो?

"वेसुवियस का दैत्य बहुत बूढ़ा है," सिबिल ने बात शुरू की, "हालाँकि उतना बूढ़ा नहीं जितनी मैं हूँ, और वह बदमिज़ाज और ऊबा हुआ और अकेला है। जो बात उसके मिज़ाज को और भी खराब बनाती है वह यह है कि उसे अनिद्रा रोग है और वह बहुत कम सो पाता है। दिन में बस वह कुछ देर झपकी लेता है। एक बार जब वह रात के आसमान को निहार रहा था तो उसे ऊपर गोल्डी उड़ान भरता दिखाई दिया। उसने सोचा कि गोल्डी को दोस्त बनाना अच्छा रहेगा, सो उसने गोल्डी को सन्देश भेजा कि सैकड़ों साल पहले उसके पूर्वज और गोल्डी के कुनबे के लोग दोस्त थे, तो क्यों न गोल्डी उससे मिलने आए? उसने कहा कि वह गोल्डी को उसके पूर्वजों के बारे में कई अद्‌भुत कहानियाँ सुनाएगाः कैसे वे खज़ानों की सुरक्षा करते थे, पृथ्वी पर विचरते थे, उनके पास जादुई शक्तियाँ थीं और वे बेहद बलशाली थे।"

"इन्हें यह सब कैसे पता है?" सुन्दरी को आश्चर्य हुआ, पर कुछ कहने की हिम्मत न कर सकी।

बूढ़ी स्त्री ने उसके विचार पढ़ लिए। "क्योंकि," वे गरज पड़ीं, "मैं सिबिल हूँ। मैं सब कुछ जानती हूँ। मैं जानती हूँ कि पहले क्या था, अब क्या है और आगे क्या होने वाला है।"

"क्या ये यह भी जानती हैं कि क्या हो सकता था?" यह विचार शिशु शार्क के दिमाग में कौंधा।

सिबिल ने उसे सुन लिया। "गुस्ताखी मत करो," उन्होंने कहा, पर साथ ही उसे एक हल्की थपकी भी दी।

शिशु शार्क और सुन्दरी उनके कुछ और पास सिमट आए। "आगे बताइए ना," उन्होंने धीमे से कहा।

"शुरू में गोल्डी और दैत्य का समय मज़े से गुज़रा, पर चाय का समय होते-होते गोल्डी ने कहा कि अब उसके घर लौटने का समय होने लगा है। इससे दैत्य नाराज़ हो गया। वह चाहता था कि गोल्डी उसके पास रहे और उसकी कहानियाँ सुने। गोल्डी ने कहा कि उसे सच में जाना होगा। दैत्य ने तय किया कि वह छल से गोल्डी को रोक लेगा।"

बूढ़ी स्त्री ने दैत्य की आवाज़ की नकल की, "प्लीज़," दैत्य बोला, *"जाने से पहले कम से कम तुम नीली कन्दरा तो देख लो। लोग तो दूर-दूर से पानी में से निकलता सिर्फ उसका प्रकाश देखने आते हैं। पानी के नीचे तो उससे भी बड़ा अजूबा है, जिसके बारे में सिर्फ मैं जानता हूँ।"*

अब बूढ़ी स्त्री ने गोल्डी की आवाज़ की नकल की। *"वह क्या है?"* गोल्डी ने पूछा।

"दैत्य ने कहा," सिबिल बोली, "कि पानी के नीचे एक जादुई आईना है, जिसमें एक खास कोण से देखने पर गोल्डी को उसका असली स्वरूप दिख जाएगा, जिससे उसे पता चलेगा कि वह वास्तव में कौन है।"

"क्या सच में वहाँ कोई जादुई आईना था?" सुन्दरी को अचम्भा हुआ।

"ओह हाँ, वहाँ वाकई एक जादुई आईना है," सिबिल ने उन्हें बताया। "पर वह खुशामदी शीशा है। जैसे तुम दिखना चाहते हो वह तुम्हारी वैसी ही शक्ल दिखाता है। और अगर तुम उसकी तरफ पाँच सेकेण्ड से ज़्यादा देखो, तो वह तुम्हारी छवि को निगल जाता है और तुम्हें अपने अन्दर कैद कर लेता है।"

सिबिल बोलती गई, "गोल्डी दैत्य को दुखी नहीं करना चाहता था, सो वह अँधेरा होने तक रुकने और दैत्य के साथ जाने को तैयार हो गया।

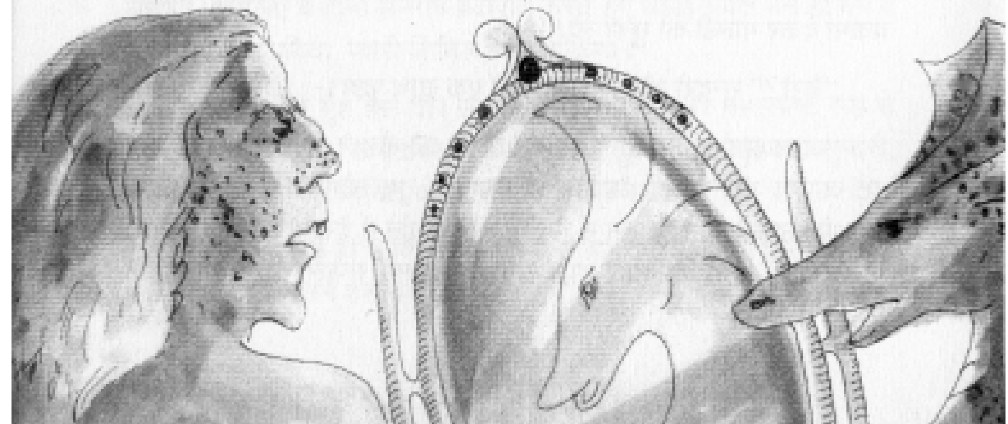
झुटपुटा होते ही दैत्य मुख्य भूभाग से नीली कन्दरा के द्वीप पर पहुँचा और गोल्डी भी उसके पीछे-पीछे गया। द्वीप पर पहुँचकर दैत्य ने एक बड़ी-सी चट्टान हटाई और गोल्डी से कहा कि छेद से झाँककर दर्पण को देखे। गोल्डी ने यही किया और उसने एक सुन्दर नौजवान ड्रैगन देखा जो इतना मनमोहक और दोस्ताना नज़र आ रहा था कि सब उससे दोस्ती करना चाहें।"

"ओह, गोल्डी सच में बेहद प्यारा और मिलनसार है, हालाँकि वह ऐसा दिखता नहीं है," सुन्दरी ना टोकने की बात भूलकर कह बैठी। "उसे हमेशा दुख होता है कि लोग उसे देखकर डर जाते हैं।"

"यही तो," सिबिल बोली। "इसीलिए तो आईना उसे पकड़ सका। गोल्डी उस नए मोहक गोल्डी को टकटकी लगा देखता गया और चन्द ही पलों में दर्पण ने उसे कैद कर लिया। अब वह कैप्री द्वीप में कन्दरा के नीचे दैत्य का बन्दी है।"

"जो भी हो, हमें दैत्य से लड़कर उसे छुड़ाना होगा," शिशु शार्क ने कहा।

"हाँ, हमारे पास अदृश्यता चोगा और साहस की तलवार है, और मैं बहुत बलवान हूँ," सुन्दरी ने जोड़ा।



"ना, दैत्य से मत भिड़ना," सिबिल ने सलाह दी, "वह तुम सबसे अधिक ताकतवर है।"

"क्या? ओपल से भी ज़्यादा ताकतवर?" शिशु शार्क ने पूछा।

"हाँ, गोल्डी और ओपल दोनों को मिलाकर भी उनसे अधिक ताकतवर। वह अपने बुढ़ापे में भी बेहद शक्तिशाली है। और उसे नाराज़ करने में कोई समझदारी नहीं है, क्योंकि तब वह भारी तबाही मचाता है," सिबिल ने उसे बताया।

"आपका क्या मतलब है?" सुन्दरी ने जानना चाहा।

सुन्दरी और शिशु शार्क अब तक सिबिल से डरना भूल चुके थे और बड़े मज़े से उनसे बातचीत कर रहे थे। और सिबिल को भी यह बुरा नहीं लग रहा था। शिशु शार्क एक खास गुलाबी आभा से दमक रहा था।

"करीब दो हज़ार साल पहले वेसुवियन ज्वालामुखी दैत्य सच में बड़ा नाराज़ हो गया था और उसने आसपास के इलाके में आग और गरमागरम लावा उगल दिया। पॉम्पेई और हर्क्यूलेनियम के शहरों में समय थम गया। लोग अपने रोज़मर्रा के कामों में लगे थे कि लावे की नदी सड़कों पर बहने लगी और राख का बादल बरसने लगा। हरेक ज़िन्दा चीज़ मानो पथरा गई और उनकी रोज़मर्रा की चीज़ें पिघली चट्टान, आग और राख से हमेशा के लिए सुरक्षित हो गईं," सिबिल ने उदासी से कहा। "तुम लोग वेसुवियस के दैत्य को बिलकुल भी न उकसाना। सबसे अच्छा यह रहेगा कि तुम लोग उसे चकमा देकर गोल्डी को छुड़ा लो।"

"कैसे?" सुन्दरी और शिशु शार्क ने एक साथ पूछा।

"अगर आईना लगातार तीन बार किसी को मोह न सके तो उसका जादू टूट जाएगा और गोल्डी आज़ाद हो जाएगा। तुम लोग दैत्य के साथ शर्त लगाओ। उससे कहो कि तुम में से तीन लोग आईने में देखोगे और फिर दूसरी ओर देखोगे, बिना गिरफ्तार हुए। अगर तुम इसमें सफल रहे तो गोल्डी के साथ-साथ तुम सब जाने के लिए आज़ाद होगे। पर अगर तुम असफल होते हो तो तुम सभी को रुकना होगा और दैत्य की चाकरी करनी होगी। दैत्य मान जाएगा, क्योंकि उसे यह पता ही नहीं होगा कि तुम उस खुशामदी आईने का राज़ जानते हो। वह यही सोचेगा कि तुममें से कम से कम एक तो ज़रूर असफल रहेगा।"

"पर यदि हम असफल रहे तो क्या होगा?" सुन्दरी और शिशु शार्क के मन में यह बात साथ-साथ उठी।

"मैं सिबिल हूँ," बूढ़ी स्त्री ने कोमल आवाज़ में कहा। "मैं बता सकती हूँ कि तुम सफल होओगे या असफल। क्या तुम जानना चाहते हो?"

"नहीं," शिशु शार्क ने कहा।

"नहीं," सुन्दरी ने कहा। "देखिए, चाहे जो भी हो, हमें गोल्डी को बचाने की कोशिश तो करनी ही होगी, सो सफलता-असफलता की बात जानने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

"तो ठीक है," सिबिल ने कहा, "जाओ और जो करना है कर डालो। अगर सफल रहते हो तो लौटकर घर जाने से पहले मुझसे मिलकर जाना। बाकी सबको मत लाना, मैं बहुत मिलनसार जीव नहीं हूँ।"

शिशु शार्क कुछ पीछे हटा। सुन्दरी अपने पैरों पर खड़ी हो गई। उन्हें पता था कि स्नेह में पगी या कोई बेहद दोस्ताना बात सिबिल को पसन्द नहीं आएगी, इसलिए वे दोनों सम्मान प्रदर्शित करते हुए थोड़ा झुके। मन ही मन वे बुदबुदाए, "अलविदा, प्यारी सिबिल, और शुक्रिया।"

बूढ़ी स्त्री दबे मुँह हँस दीं। उनकी हँसी मन्द थी, पर वह स्पष्ट रूप से हँसी थी। उन्हें लगा कि सिबिल को यह कहते हुए सुना, "गुडबाय सुन्दरी, गुडबाय शिशु शार्क। सिबिल का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।"

वे जाने को मुड़े ही थे कि सिबिल ने उन्हें वापस बुला लिया। उन्होंने उन्हें एक बोतल दी जिसमें हरा द्रव था।

"यह क्या है?" सुन्दरी ने पूछा।

"यह खुशमिज़ाजी की दवा है। अगर तुम इसे दैत्य को पिला सको तो ज़रूर पिलाना। इससे वह शान्त हो जाएगा।"

शिशु शार्क और सुन्दरी ने सिबिल को धन्यवाद दिया और गलियारे से बाहर निकल आए।



5

शर्त

सुन्दरी और शिशु शार्क जितना हो सके उतनी तेज़ी से अपोलो के मन्दिर की ओर बढ़े। वे बेहद भूखे थे और उन्हें उम्मीद थी कि दूसरों को कुछ खाना मिल गया होगा। और वाकई उन्हें खाना मिला था। अदिति और सिरिल पहाड़ी की ढलान के बागानों से अंगूर, सन्तरे, नींबू और जैतून लाए थे। उन्हें पास ही पानी का एक झरना भी मिल गया था।

इस बीच, ओपल और एक आँख वाली बन्दरिया ने वेसुवियस पर्वत ढूँढ लिया था, और वे कैप्री द्वीप को भी देख आए थे। उन्हें नीली कन्दरा में घुसने का समुद्री रास्ता भी पता चल गया था। कन्दरा में से नीली रोशनी बिखर रही थी। अन्दर जाने का रास्ता बहुत छोटा था और ओपल के लिए उसमें घुस पाना मुमकिन नहीं था, सो बन्दरियाजी ने मन पक्का कर अपने रोएँ गीले होने की नापसन्दगी पर काबू पाया और पानी में कूद पड़ी थी। उसने बताया कि पानी के नीचे प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने वाली किसी सतह से नीली रोशनी बाहर आती है। पानी का बहाव तेज़ था, और वह अच्छी तरह छानबीन नहीं कर पाई थी। कम से कम उन्होंने जगह का पता तो लगा लिया था। ओपल ने आसपास के पानी में उगी वनस्पतियों से अपना पेट भर लिया था और वे अपोलो मन्दिर की ओर लौट आए थे ताकि सबको बता सकें।

"आह, जादुई आईना!" सुन्दरी और शिशु शार्क एक स्वर में बोल उठे।



कौन सा जादुई आईना, बाकी सब जानना चाहते थे, पर सुन्दरी और शिशु शार्क ने और एक शब्द भी कहने से पहले कुछ खाने-पीने पर ज़ोर दिया। जब सुन्दरी कुछ फल खा चुकी और शिशु शार्क ने ओपल द्वारा लाई समुद्री घास खा ली और दोनों ने नज़दीक के झरने का पानी पी लिया, तब जाकर उन्होंने वह सब बयान किया जो उन्होंने सिबिल से सुना था।

"क्या तुम्हें पक्का पता है कि ज्वालामुखी दैत्य उस गड्ढे में रहता है?" बन्दरियाजी ने पूछा। "हम वहाँ गए थे, और मैंने किनारे पर से झाँककर देखा भी था। मुझे तो एक विशाल ढलान और भाप के कुछ बादलों के सिवाय कुछ भी नहीं दिखा।"

"और नीचे पहाड़ी की ढलान पर हमें जमे हुए लावे की नदी दिखाई दी थी," ओपल ने जोड़ा।

"मुझे लगता है कि दैत्य उन पत्थरों और कंकड़ों के नीचे रहता है जहाँ से ज्वालामुखी फूटा होगा," सुन्दरी ने उनसे कहा।

"हाँ, और मुझे लगता है कि जो भाप दिखाई दी वह दैत्य की साँस है," शिशु शार्क ने जोड़ा। "सिबिल झूठ नहीं बोलेंगी। वे ऐसा नहीं करती हैं।"

सभी इस बात पर सहमत थे कि सिबिल झूठ नहीं कह सकतीं, पर ओपल यह नहीं समझ पाई कि दैत्य और गोल्डी नीली कन्दरा में घुसे कैसे होंगे। "अन्दर जाने का रास्ता बहुत छोटा है," वह बुदबुदाई। "यहाँ तक कि मेरा सिर भी नहीं समा सकता।"

शिशु शार्क ने उसे बताया कि सिबिल ने कहा था कि ज्वालामुखी दैत्य ने पहाड़ की चोटी पर से एक चट्टान हटाई थी ताकि गोल्डी अन्दर झाँक सके। दर्पण को एक खास कोण से देखना था।

ज़ाहिर था कि गोल्डी को छुड़ाने के लिए ज्वालामुखी दैत्य को इस बात के लिए मनाना ज़रूरी था कि वह उन्हें दर्पण की चुनौती स्वीकार करने दे।

"तुम दोनों बड़े चतुर हो जो तुमने इतनी सारी जानकारियाँ पा लीं," अदिति ने शिशु शार्क और सुन्दरी से कहा।

सुन्दरी ने इस बारे में सोचा। "नहीं," उसने आहिस्ते से जवाब दिया। "इसमें चतुराई की बात नहीं थी। बस किस्मत अच्छी थी।"

"चलो ठीक है," अदिति ने मुस्कुराकर कहा, "किस्मत से सिबिल को तुम अच्छे लगे।"

"ज्वालामुखी दैत्य से बातचीत करते समय हमें सावधान रहना होगा कि हम उसे नाराज़ न कर दें। जब वह नाराज़ हो जाता है तो भारी तबाही मचाता है," शिशु शार्क बोला। उसने बताया कि कैसे दैत्य ने सालों पहले पॉम्पेई और हर्क्युलेनियम शहरों को लावे से ढक दिया था व राख के ढेर में दबा दिया था।

"ओह, और सिबिल ने यह भी बताया कि दैत्य हममें से किसी से भी बहुत, बहुत ज़्यादा ताकतवर है," शिशु शार्क ने जोड़ा।

ओपल, शिशु शार्क और चारों जाँबाज़ों ने सारी जानकारियों पर सोच-विचार किया और दैत्य का सामना करने के लिए खुद को अच्छी तरह तैयार किया।

"एक तरह से देखें तो साहस की तलवार, अदृश्यता चोगा या जादुई मिट्टी ले जाने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि हम दैत्य से लड़ने नहीं वाले हैं। फिर भी क्योंकि यह सब हौदे में पहले से रखा ही हुआ है, तो ले चलते हैं," अदिति बुदबुदाई।

"और क्या पता, अगर हम सफल हो जाएँ तो गोल्डी को साथ लेकर सीधे घर के लिए उड़ान भर सकते हैं," बन्दरियाजी ने जोड़ा।

वे सब थके हुए थे, पर उन्होंने कुछ देर ही आराम किया। घण्टे भर बाद ओपल ने कहा कि वह उन्हें उड़ा ले चलने को तैयार है। उसे लगा कि शायद अँधेरा रहते ही, जब बाकी लोग गहरी नींद सो रहे हों, दैत्य से निपट लेना चाहिए।

"अगर हमारे जगाने से वह नाराज़ हो जाए तो क्या होगा?" बन्दरियाजी बुदबुदाई।

"सिबिल ने कहा था कि उसे ज़्यादा नींद नहीं आती और उसकी आदतें निशाचरों जैसी हैं," शिशु शार्क ने उसे भरोसा दिलाया।

उन्होंने हौदा ओपल की पीठ पर बाँधा और उसमें चढ़ गए। ओपल मद्धम चाँदनी में उन्हें उड़ा ले चली और चन्द ही मिनटों में वे गड्ढे के मुँह के पास जा उतरे। उन्होंने झाँककर देखा। एक आँख वाली बन्दरिया ने सही कहा था। वहाँ देखने लायक कुछ खास नहीं था।

"एक पत्थर नीचे फेंकते हैं," सिरिल ने सुझाया, "जैसे खटखटाया जाता है उसी तरह, और देखते हैं कि आगे क्या होता है!"

उन्होंने एक छोटा पत्थर नीचे फेंका, फिर दो या तीन पत्थर, फिर बड़ी-बड़ी चट्टानें भी, पर कुछ न हुआ। आखिरकार ओपल ने एक विशाल चट्टान लुढ़काई और इन्तज़ार किया। अन्ततः उन्होंने एक पुकार सुनी, "बगल वाले रास्ते से आओ!"

वे गड्ढे के दूसरी ओर गए और पहाड़ी की ढलान पर ढूँढने के बाद उन्हें सुरंग में घुसने का एक रास्ता मिला जो घनी वनस्पतियों से बखूबी छिपाया हुआ था। सुरंग काफी बड़ी थी और ओपल भी उसमें घुस सकी। उन्होंने देखा कि दैत्य एक बड़ी-सी गुफा में रखी कुर्सी पर पसरा पड़ा है। साफ तौर पर वह उनकी राह देख रहा था।

"गोल्डी के दोस्त लगते हो?" वह दहाड़ा। "मुझे लगा था कि तुम आ सकते हो। क्या तुम्हें भी आईने में देखना है?"

अदिति आगे बढ़ी। "श्रीमानजी," उसने भरसक शिष्टता से कहा, "हम आईने की चुनौती स्वीकारने आए हैं।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?" दैत्य बड़बड़ाया।

"श्रीमानजी," अदिति बोलती गई, "हम तीन जने आईने में देखना चाहेंगे। अगर हम तीनों आईने में देखकर आगे निकल जाएँ, तो आईना खुल जाएगा और गोल्डी आज़ाद हो जाएगा। यह ठीक है ना?"



"हाँ, ठीक है," दैत्य ने कहा। "पर तुम कहना क्या चाहती हो?"

"हमने सोचा," अदिति ने कूटनीतिज्ञ की तरह चतुराई का इस्तेमाल करते हुए कहा, "कि शायद आपको एक शर्त लगाने में मज़ा आएगा। अगर हम ऐसा करने में सफल हो जाते हैं, तो क्या आप हमें शान्ति से जाने देंगे?"

दैत्य ने उन्हें शक से देखा। क्या ये उसे छलना चाहते हैं? "अगर तुम हार गए तो?" दैत्य ने पूछा।

"तब श्रीमान, हम यहीं रहेंगे और आप जो कहेंगे वो करेंगे," अदिति ने जवाब दिया।

दैत्य ने खूब सोचा। वह हार कैसे सकता था? जिसने भी दर्पण में देखा था वह उसमें फँस गया था। उसे लगा कि ये सब दुस्साहसी बेवकूफ हैं।

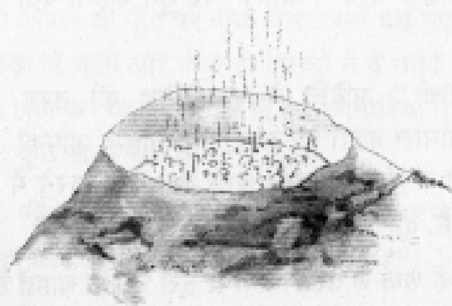
"ठीक है," उसने बात मान ली, "पर अगर तुममें से कोई एक भी असफल हुआ, तो तुम सबको यहीं रहना होगा और मेरे लिए काम करना होगा।"

अदिति ने दूसरों की ओर देखा। सबने हामी में सिर हिलाया।

"हाँ, ठीक है," अदिति ने दैत्य से कहा, "हमें मंज़ूर है।"

"इतना ही नहीं," दैत्य ने जोड़ा, "मैं तय करूँगा कि तुममें से कौन तीन लोग दर्पण में देखेंगे।"

उन्होंने एक-दूसरे से नज़रें मिलाईं और यह शर्त भी मान ली।



6

दर्पण, ओ दर्पण



दैत्य खुद से बड़ा खुश था। वह अपने जीतने की सम्भावनाओं को बढ़ाने वाला था। उसने सोचा कि ओपल और शिशु शार्क पहले ही इतने सुन्दर हैं कि आईना उनको और सुन्दर नहीं दिखा सकेगा और वे शायद फँस न सकें। यह जोखिम न लेना ही बेहतर था। जहाँ तक सिरिल की बात थी, वह तो दैत्य को दिख ही मुश्किल से रहा था। दैत्य को लगा कि उसके बारे में सोचने से कोई फायदा नहीं था। उसने अदिति पर गौर किया। वह एक नन्ही-सी लड़की थी और वह ज़रूर फँसेगी। और एक आँख वाली बन्दरिया, उसकी तो एक ही आँख थी और वह आसानी से फँस जाएगी। पर अगर ये दोनों किसी तरह दर्पण से बच निकले, तो वह अनाड़ी हथिनी तो ज़रूर फँसेगी। आखिर उन सबको फँसाने के लिए बस एक ही का असफल होना काफी था।

दैत्य ने उन सबको ऊपर से नीचे तक देखा और कहा कि लड़की, बन्दरिया और हथिनी परीक्षा देंगीं। वे सब उड़कर नीली कन्दरा के ऊपर वाली चट्टान तक जाएँ। वह चलकर कुछ ही देर में वहाँ पहुँच जाएगा।

"अब जाओ!" वह चीखा।

चारों जाँबाज़, शिशु शार्क और ओपल चल दिए। कोई दूसरा चारा भी नहीं था।

दैत्य चाँदनी में बाहर निकला तो वह खुद को बधाई दे रहा था। उसने ऐसी शर्त लगाई थी जिसे वह ज़रूर जीतने वाला था। वह मन ही मन सूची बनाने लगा कि वह क्या-क्या जीतेगा:

दो ड्रैगन – एक सुनहरा, एक दूधिया। बेहद उम्दा नमूने। वे सबको प्रभावित करेंगे।

एक नन्ही लड़की – बड़ी नहीं, पर काफी तेज़। घरेलू काम के लिए अच्छी।

एक एक आँख वाली बन्दरिया – उम्र में कुछ बड़ी, पर शायद इधर-उधर दौड़-भागकर काम कर सकेगी।

एक शिशु शार्क – वह भी भाग-दौड़ कर सकेगा।

एक हथिनी – भारी काम के लिए अच्छी।

और एक चींटा, जिसके बारे में सोचना ही बेकार था।

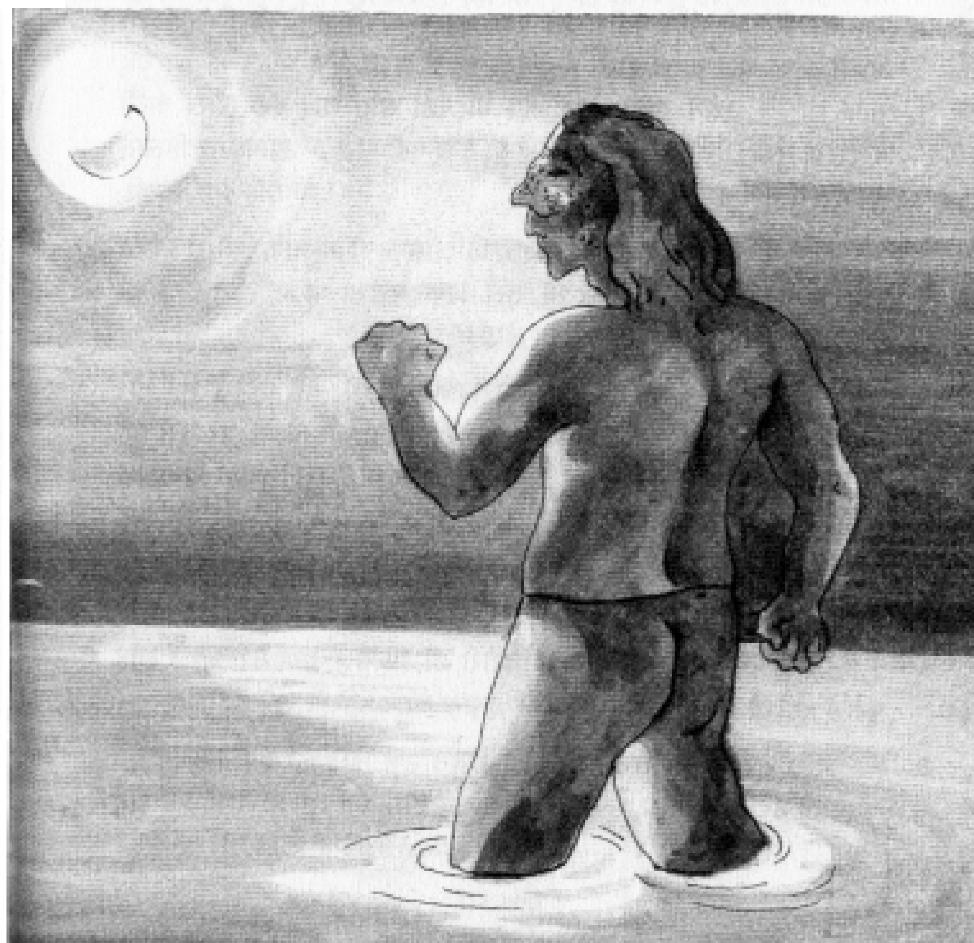
"अच्छे फँसे हैं जाल में," दैत्य ने खुद से कहा। वह द्वीप की ओर बढ़ते समय मुस्कुरा रहा था।

ओपल नीली कन्दरा में घुसने की जगह के ऊपर वाली चट्टान पर उतरी। सब कुछ शान्त था। नाव और नाविक और पर्यटक सब जा चुके थे। वे दैत्य को अपनी ओर बढ़ते देख रहे थे। वह समुद्र में कुछ दूर चला, कुछ दूर तैरा और जल्द ही उनके पास पहुँच गया।

"तो यह लो," वह गुर्राया। "पहले कौन जाएगा?"

अदिति आगे बढ़ी। "सावधान," उसने खुद से फुसफुसाकर कहा। "आईना तुम्हें मोहित न कर पाए।"

दैत्य ने एक बड़ी चट्टान उठाई, और फौरन नीचे से नीला प्रकाश जगमगाने लगा। दैत्य ने अदिति को इशारा कर उसमें देखने को कहा। अदिति ने देखा। उसे एक मज़बूत, वयस्क महिला की छवि दिखी जो बुद्धिमान



और दयालु लगती थी। वह ऐसी स्त्री दिखती थी जिसने ज़िन्दगी में कभी कोई गलती न की हो।

बिना झिझके, अदिति मुड़ी और दूसरों की ओर देखकर खेद प्रकट करते हुए मुस्कुराई, "यह मैं नहीं हूँ। मैं तो हमेशा दर्ज़नों गलतियाँ करती हूँ।"

दैत्य नाराज़ हुआ। "तो, एक बच निकली," उसने खुद से बुदबुदाकर कहा, "पर यह बूढ़ी बन्दरिया ज़रूर फँसेगी।"

बन्दरियाजी आगे बढ़ी। उसे एक जवान बन्दरिया दिखी जिसकी दो अच्छी आँखें थीं। दर्पण वाली बन्दरिया इतनी चुस्त और चपल थी कि यह साफ था कि उसने गठिया का नाम भी नहीं सुना था। एक आँख वाली बन्दरिया मुड़ी। "सदाबहार जवानी जैसा कुछ नहीं होता," उसने सिर हिलाते हुए दूसरों से कहा।

दैत्य को अचरज हुआ। लगातार दो लोग फन्दे में नहीं फँसे थे। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। फिर भी, उसे पक्का भरोसा था कि जीत उसी की होगी। दर्पण हथिनी को ज़रूर फँसा लेगा।

और दर्पण में देखने की अब सुन्दरी की बारी थी। वह घबराई हुई थी। वह अपने साथियों की उम्मीदों को ध्वस्त नहीं करना चाहती थी, पर उसे यह भी पता था कि कभी-कभार वह भ्रमित हो जाती थी। उसने सोचा कि काश वह इतनी चतुर हो कि दर्पण की चालाकी को समझ सके। पर यदि वह ऐसा न कर पाई तो क्या होगा? तब उन सबको ज़िन्दगी भर दैत्य की गुलामी करनी होगी। वह दैत्य की ओर मुड़ी।

"ओह प्लीज़," उसने दैत्य से चिरौरी की, "प्लीज़, क्या मेरी जगह कोई दूसरा नहीं ले सकता है? दरअसल मैं ज़्यादा चतुर हथिनी नहीं हूँ।"

दैत्य गुर्राया। "शर्त तो शर्त है," उसने उसे झिड़कते हुए कहा। "तुम चाहो तो हट सकती हो, पर इसका मतलब होगा कि तुम हारीं और मैं शर्त जीता।"

सुन्दरी ने खुद को सम्हालने की पूरी कोशिश की। बन्दरियाजी और अदिति ने उसकी पीठ थपथपाई। ओपल आश्वासन देती मुस्कुराई। और शिशु शार्क तथा सिरिल ने उसे दृढ़तापूर्वक कहा, "तुम ठीक रहोगी।"

सुन्दरी गड्ढे की ओर बढ़ी और उसने झाँककर नीचे आईने की ओर देखा। उसे हाथियों की प्रधान हथिनी नज़र आई जो तर्कशील और समझदार और सौम्य और शान्त लग रही थी। उसके बारे में कुछ सोचे बिना ही सुन्दरी फौरन मुड़ गई। वह खिलखिला रही थी। "यह तो मैं हूँ ही नहीं!" वह हँसते हुए बोली। "मैं तो आधे से ज़्यादा समय समझदार भी नहीं होती, बुद्धिमान और शान्त और वह सब होने की बात तो बहुत दूर की है!"

सब उसके पास घिर आए। "बहुत बढ़िया, सुन्दरी! बहुत ही अच्छा किया! हम जीत गए! हम जीत गए!"

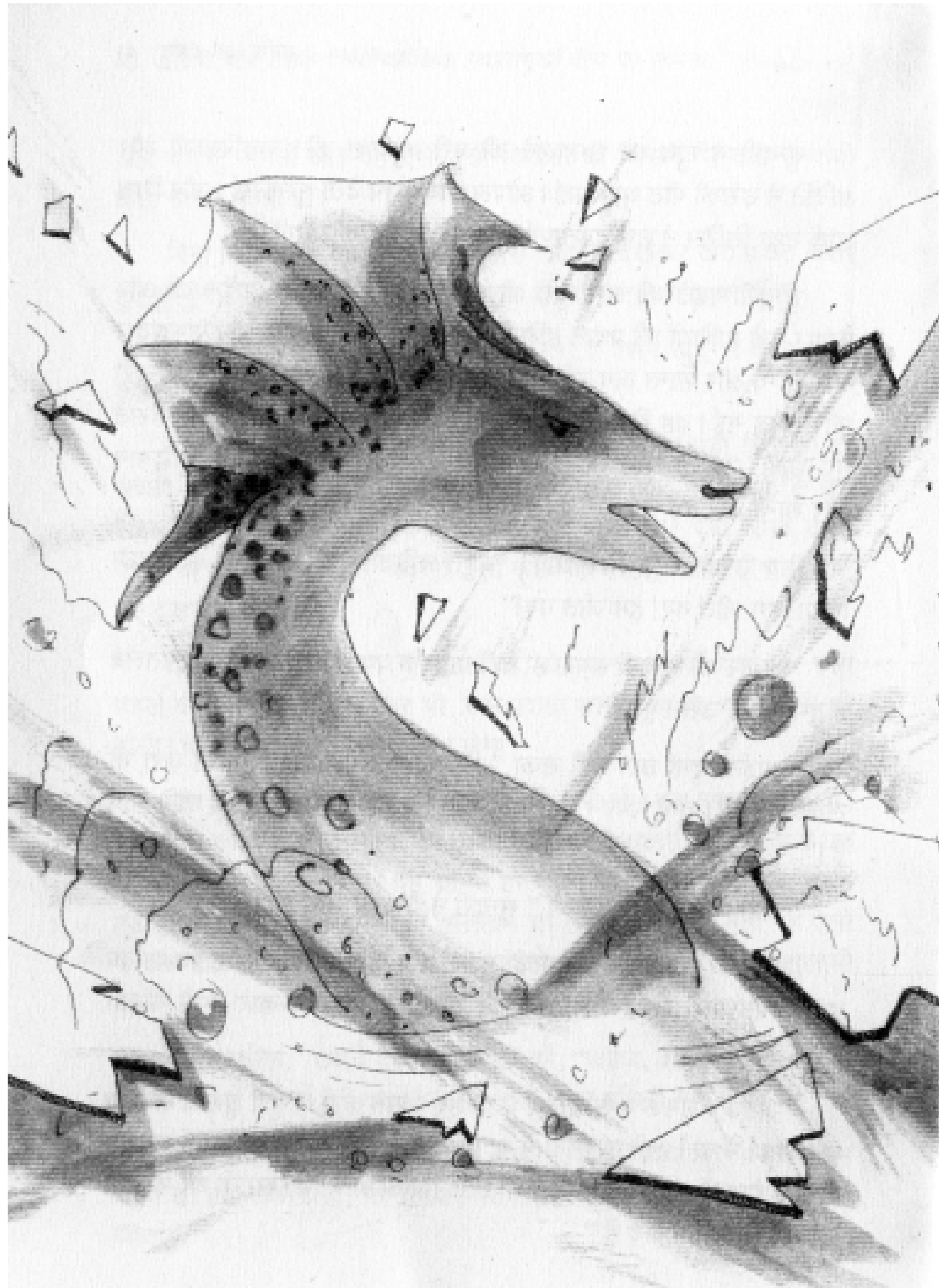
पल भर को सुन्दरी समझ ही नहीं पाई कि क्या हो रहा है। "क्या मतलब है तुम्हारा?" उसने पूछा।

"आईना तुम्हें छल नहीं सका," सिरिल ने समझाया। "तुम तो ज़रा भी ललचाई नहीं। तुम्हें फौरन पता चल गया कि वह तुम्हारी असली छवि नहीं है।"

"ओह, यह तो अच्छा हुआ," सुन्दरी ने चैन की साँस ली।

अचानक एक ज़ोरदार धमाका हुआ, और पानी की भाप और प्रकाश का एक शक्तिशाली फव्वारा आकाश की ओर उठा। उस फव्वारे में से गोल्डी प्रकट हुआ।

"ओहो," उनके पास आकर बैठते हुए उसने कहा। "मुझे छुड़ाने के लिए धन्यवाद। मैं वहाँ बड़ी परेशानी में था। आईने ने मुझे बताया था कि मैं अद्भुत दिखाई देता हूँ, पर मैं हिल-डुल भी नहीं सकता था। ऐसा लगता था मानो मैं बर्फ की सिल्ली में कैद हूँ!"



सबने उसे गले लगाया, उसे चूमा, और फिर वे दैत्य से मुखातिब हुए।

"श्रीमानजी," अदिति ने विनम्रता से कहा "हम शर्त जीत गए हैं, पूरी ईमानदारी से, सो अब हम सब अपना रास्ता पकड़ेंगे।"

"नहीं!" दैत्य दहाड़ा। "तुममें से कुछ लोग जा सकते हो, पर सब नहीं।"

"क्यों नहीं?" अदिति ने विरोध किया। "बात तो यही तय हुई थी।"

"तय यह हुआ था कि अगर तुम सफल हो जाओ तो तुम जा सकते हो," दैत्य ने कठोरता से कहा। "तो ठीक है, तुम तीन लोग जीते हो, सो तुम, हथिनी और बन्दरिया जा सकते हो। और हाँ, मैं चींटे को भी जाने दूँगा। पर दोनों ड्रैगन और नन्हा शार्क मेरे पास रहेंगे। यही होगा। अगर तुम लोगों को यह पसन्द न आए तो मेरी बला से।"

"तुम धोखेबाज़ और झूठे हो," अदिति ने उसे कहा। वह उसकी खुशामद करते हुए तंग आ चुकी थी और वह साहस की तलवार म्यान से निकालने को तैयार थी। "हमने शर्त जीत ली है, और हम जा रहे हैं। यही होगा!"

"मुझे गुस्सा न दिलाओ। वरना मैं चिढ़ जाऊँगा और मीलों तक आसपास का इलाका राख और लावे से पट जाएगा," दैत्य ने उन्हें चेताया।

उसके पैरों तले की धरती धुँआने भी लगी थी और उसके सिर के ऊपर का आकाश नाराज़गी भरा सुर्ख रंग ले रहा था।

वे क्या कर सकते थे? उन्हें धोखेबाज़ दैत्य से निपटने का रास्ता ढूँढना ही होगा।

7

मेरा कहना मानो, वरना...

ओपल और बन्दरियाजी ने हस्तक्षेप किया।

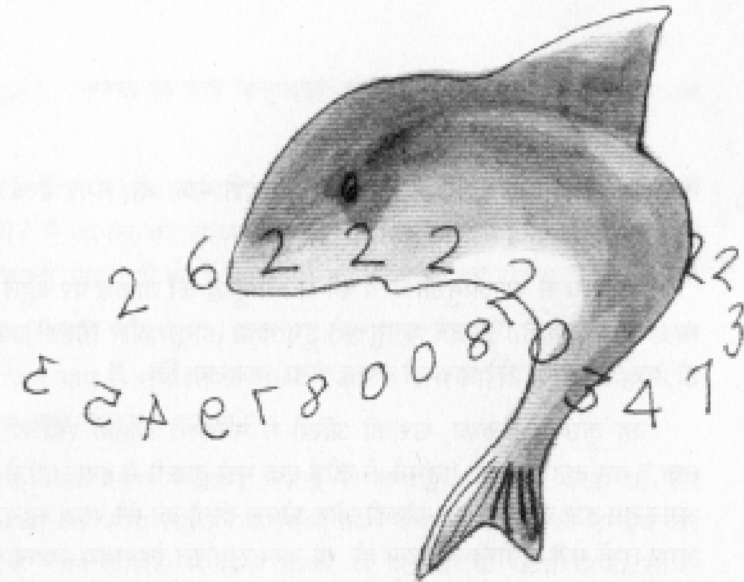
"प्लीज़, दैत्य महोदय," ओपल ने प्यार से कहा, "आप तो जानते हैं कि हम अजनबी हैं, और यहाँ के तौर-तरीके नहीं जानते। हम सच में आपका अपमान नहीं करना चाहते थे।"

"नहीं," बन्दरियाजी ने दोहराया, "हम ऐसा कतई नहीं करना चाहते थे। प्लीज़, दैत्य महोदय, क्या कोई उपाय नहीं है कि हम शिशु शार्क और दोनों ड्रैगनों को छुड़ा सकें?"

"ठीक है, अब मुझे सोचने दो," दैत्य बुदबुदाया। उसे बड़ा मज़ा आ रहा था। जब से गोल्डी के दोस्त आए थे वह ज़रा भी ऊबा नहीं था।

"एक बात कहूँ, मुझसे ज़्यादा चतुर और बलवान तो कोई और है नहीं; पर अगर तुम यह सिद्ध कर दो कि तुम मुझ जितने चतुर हो, तो मैं गोल्डी और शिशु शार्क को जाने दूँगा।"

"पर महोदय," बन्दरियाजी ने फौरन कहा, "हम कभी यह सिद्ध नहीं कर सकेंगे कि हम आप जितने चतुर हैं, क्योंकि इस दुनिया में आप जितना चतुर कोई है ही नहीं। पर आप कोई छोटा और आसान काम दें, तो शायद हम सिद्ध कर सकें कि हम बिलकुल बेवकूफ भी नहीं हैं, और कुछ हद तक आपसे बात करने लायक हैं।"



दैत्य को बन्दरियाजी का जवाब पसन्द आया। "ठीक है," उसने शान से कहा, "अगर तुम मेरी उम्र बिलकुल सही-सही बता सको, तो मैं गोल्डी और शिशु शार्क को जाने दूँगा, पर अगर तुम ऐसा नहीं कर..."

वह अपनी बात खत्म करता, उसके पहले सब सुन्दरी को घूरने लगे थे। उसने अचानक अपने दोनों कान नाव की पालों की तरह फैला लिए थे। इस बीच, शिशु शार्क उसके सिर के ऊपर मँडराने लगा था। वह बर्फ-सा सफेद हो गया था और उस पर छः अंकों वाली संख्याओं की एक स्पष्ट नीली शृंखला धीमे-धीमे उभरने और सरकने लगी।

बन्दरियाजी ने उन्हें पढ़ना शुरू किया, "262222 347322 129800 879453..."

यह कुछ देर चलता रहा। इसके बाद सुन्दरी मुड़ी और मुस्कुराकर दैत्य से बोली, "महोदय, आपकी ठीक-ठीक उम्र यह है।"

"तुम्हें कैसे पता चला?" दैत्य गुस्से से दहाड़ा।

"आपकी बुद्धि की ताकत से, दैत्य महोदय। आपके विचार ही मेरे शरीर पर उभर आए थे," शिशु शार्क ने जल्दी से उसे कहा। सच यह था कि सिबिल

ने उसे और सुन्दरी को एक दूरानुभूति-सन्देश भेजा था, मगर दैत्य को यह बात बताने का कोई मतलब नहीं था।

सौभाग्य से ज्वालामुखी दैत्य को अपनी बुद्धि की ताकत पर बहुत भरोसा था। "तो, ठीक है," उसने भुनभुनाते हुए कहा। "तुम और गोल्डी जा सकते हो, पर ओपल को मेरे पास ही रहना होगा, जब तक कि..."

वह कुछ पल रुका, उसकी आँखों में मक्कारी झलक रही थी। "जब तक," वह कहता गया, "तुममें से कोई एक मुझे कुश्ती में हरा नहीं देता। पर अगर तुम हार जाते हो, तो गोल्डी और ओपल दोनों को मेरे साथ रहना होगा। अगर तुम्हें मेरी चुनौती स्वीकार हो, तो कल सूर्यास्त के समय ज्वालामुखी के गड्ढे के पास आ जाना।"

"किसी की मर्ज़ी के खिलाफ उसे रोके रखने का आपको कोई हक नहीं है," सिरिल ने विरोध किया।

"क्या कहा?" दैत्य दहाड़ा, "क्या तुम मेरी बात काटने की हिम्मत कर रहे हो, तुच्छ और निरर्थक छोटे-से कीड़े?"

"वह तुच्छ या निरर्थक नहीं है," अदिति ने चीखकर दैत्य से कहा। "और वह बिलकुल सही कह रहा है।"

दैत्य उन्हें घूरता रहा।

"मैं जो कहता हूँ करो," दैत्य गुर्राया, "वरना तुम पछताओगे।"

"हाँ, माफ कीजिए," अदिति ने सावधानी से कहा और सुन्दरी की आड़ में दुबक गई। उसे पता था कि दैत्य को उकसाना बेवकूफी थी।

इस बीच सिरिल बन्दरियाजी के कानों में कुछ फुसफुसा रहा था। अब बन्दरियाजी आगे आई। उसने दैत्य की खुशामद करने की कोशिश की।

"प्लीज़, दैत्य महोदय," उसने अदब से कहा। "दुनिया में आप जितना ताकतवर तो कोई है ही नहीं। क्या आप हमें कोई आसान काम नहीं बता सकते, ताकि हमें ओपल को छुड़ाने का मौका तो मिले?"

"हो, हो, हो! छोटी बन्दरिया," दैत्य ज़ोर से हँसा, "क्या इतना भी नहीं समझती? मैं ओपल को आज़ाद करना ही नहीं चाहता। तुममें से एक को मुझसे कुश्ती लड़नी ही होगी। जो जीतेगा वह ओपल को रखेगा।"

बन्दरियाजी ने अचानक अपनी ठुड्डी ऊपर उठाई। "ठीक है," उसने कहा। "हम आप से सूर्यास्त के समय गड्ढे के पास मिलते हैं। और हममें से कोई एक आप से कुश्ती लड़ेगा।"

बाकी सब लोग परेशान नज़रों से बन्दरियाजी को देख रहे थे। बन्दरियाजी क्या सोच रही हैं? उनमें से कौन दैत्य को हराने की उम्मीद कर सकता है? पर सिरिल ने उन्हें इशारे से बताया कि बन्दरियाजी सोच-समझकर ही ऐसा कह रही हैं।

"मंज़ूर," दैत्य दहाड़ा। इतना कहकर उसने ओपल का एक पंख पकड़ा और उसे घसीटकर ले जाने की कोशिश करने लगा।

"इतनी जल्दी नहीं," गोल्डी ने उससे कहा। "अभी आपने कुश्ती नहीं जीती है।"

"ओह, ठीक है," दैत्य ने बेमन से बात मानी। अब तक सुबह हो चली थी और दैत्य थक गया था। वह मुड़ा और समुद्र में चलने लगा। उनकी ओर मुड़कर वह दहाड़ा, "अगर आज शाम तुम गड्ढे के पास नहीं पहुँचे, तो मैं..."

"हाँ, हमें पता है," अदिति ने थकान भरी साँस छोड़ी, "आपको गुस्से का दौरा पड़ेगा।"

दोनों ड्रैगन, शिशु शार्क और चारों जाँबाज़ अपोलो के मन्दिर की ओर लौट आए। वहाँ उतरने के बाद बन्दरियाजी ने सबसे कहा, "इस वक्त हम सब थके हुए हैं। अभी थोड़ा आराम करते हैं, और फिर बात करेंगे कि हम क्या कर सकते हैं। सिरिल की एक योजना है जो वह बताना चाहता है।"

वे कम सो पाए थे और बेहद थके हुए थे। दोनों ड्रैगनों ने 'छोटा बनाओ' लेप लगाया और अपना आकार छोटा कर लिया। वर्ना पहाड़ी की ढलान पर

पसरे दो विशाल ड्रैगन सबको साफ नज़र आते। फिर, दूसरों की तरह वे भी खण्डहरों में घुसे और फौरन सो गए। बन्दरियाजी हौदे में दुबक गई, जो ओपल की पीठ से उतार दिया गया था। शिशु शार्क उसके पास सीट पर आराम करने लगा। अदिति सुन्दरी के पाँवों के बीच सो गई, और सिरिल अपनी माचिस की डिबिया में, जो अदिति की जेब में सुरक्षित थी।

वे कुछ घण्टों तक गहरी नींद सोए और उठे तो ताज़गी से भरे थे। उन्होंने पास के झरने पर हाथ-मुँह धोया, कुछ फल खाए और फिर सोचने बैठ गए कि क्या करना चाहिए।

"मेरी एक योजना है," सिरिल ने कहा।

सब लोग उसके बोलने का इन्तज़ार करते रहे।

"यह बिलकुल आसान है। मैं ज्वालामुखी दैत्य से लड़ूँगा," सिरिल ने उनसे कहा।

वे समझ नहीं पाए कि हँसें या शाबाशी दें।

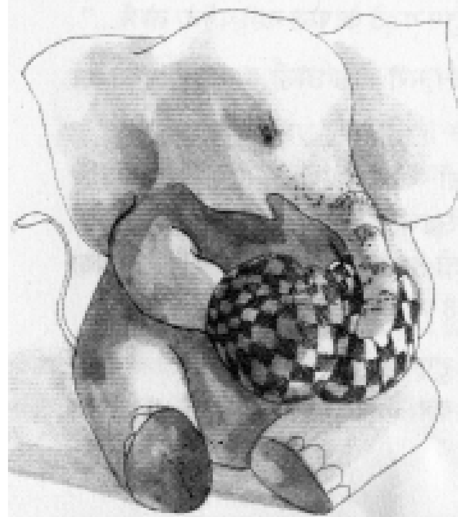
"प्यारे, बहादुर सिरिल," सुन्दरी ने प्यार से कहा। "तुम दिलेर हो, पर मैं तुमसे बहुत, बहुत बड़ी हूँ। मैं दैत्य से लड़ूँगी।"

"और प्यारी सुन्दरी, मैं तुमसे भी बहुत, बहुत, बहुत बड़ी हूँ, सो मैं दैत्य से लड़ूँगी," ओपल ने टोका।

"पर तुम्हें तो लड़ना ही नहीं आता," सुन्दरी ने जवाब दिया।

"खैर, मैं सीख सकती हूँ," ओपल बोली।

गोल्डी ने उन्हें रोका। "ना, तुम दोनों को ही दैत्य से लड़ना नहीं



चाहिए। मैं हम सबमें सबसे बड़ा हूँ और शायद सबसे ताकतवर भी। दैत्य से मुझे ही कुश्ती लड़नी चाहिए।"

"पर वह तुम्हें पछाड़ देगा," सुन्दरी रुआँसी होकर बोली। "क्या तुम्हें याद नहीं कि सिबिल ने क्या कहा था? दैत्य हम सबसे ज़्यादा बलवान है।"

"मैं ओपल और गोल्डी और दैत्य, तीनों की कुल ताकत से भी ज़्यादा ताकतवर हूँ," सिरिल ने उन्हें बताया।

वे उसे घूरने लगे। "ओह सिरिल!" अदिति चीखी। "बकवास मत करो!"

"उसका मतलब है," बन्दरियाजी ने समझाया, "कि अगर वह गोल्डी जितना बड़ा होता तो उससे कहीं ज़्यादा ताकतवर होता!"

"कम से कम बीस गुना ज़्यादा," सिरिल ने जोड़ा।

गोल्डी विस्मित होकर उसे देखने लगा। "क्या यह वास्तव में सच है?"

सिरिल ने अपने कन्धे उचकाए। "बेशक, यह सच है। मेरे आकार के हिसाब से मैं बेहद ताकतवर हूँ। देखो, मैं यह सिद्ध करता हूँ। तुम अपने वज़न से कितने गुना भार उठा सकते हो?"

गोल्डी ने अपना सिर खुजलाया। "अगर मैं खूब कोशिश करूँ, तो मुझे लगता है कि शायद मैं एक-दो मिनट तक अपने भार जितना वज़न उठा सकता हूँ।"

"पर मैं बड़ी आसानी से अपने वज़न से कम से कम बीस गुना भार उठाकर ले जा सकता हूँ," सिरिल ने उससे कहा। "देखो!" उसने एक छोटा तिनका उठाया और उसे कुछ इंच दूरी तक ले गया।

शिशु शार्क प्रभावित हुआ। "तुम सच में बलवान हो। पर मुझे लगता है कि दैत्य से मुझे लड़ना चाहिए। मैं फुर्ती से इधर-उधर, हर तरफ झपट सकता हूँ। यहाँ तक कि मैं अदृश्य हो सकता हूँ और उसकी नाक पर काट सकता हूँ!"

"पर अदृश्य तो मैं भी हो सकती हूँ," सुन्दरी फौरन बोली। "मुझे सिर्फ चोगा पहनना होगा। और मैं तुमसे ज़्यादा ताकतवर हूँ। मैं उसके पेट पर टक्कर मार सकती हूँ।"

बन्दरियाजी समझ रही थी कि वे इस बात पर बहस करते रहेंगे कि दैत्य से कुश्ती कौन लड़े। "प्लीज़," वह बोली। "हम इस बारे में बहस कर अपनी बात मनवाना चाहेंगे तो कुछ हासिल नहीं होगा। यह बहुत ज़रूरी है। हमें तार्किक ढंग से हल निकालना होगा।"

"हाँ," सुन्दरी फौरन मान गई। "हमें विवेकवान और तर्कपूर्ण और समझदार होना होगा।"

वे समस्या का सही समाधान सोचने की कोशिश में जुट गए।

8

किसे क्या करना चाहिए

"मैं विवेकपूर्ण बात कह रहा हूँ," शिशु शार्क ने विरोध किया। "मैं सबसे छोटा हूँ, सो मुझे ही दैत्य से लड़ना चाहिए।"

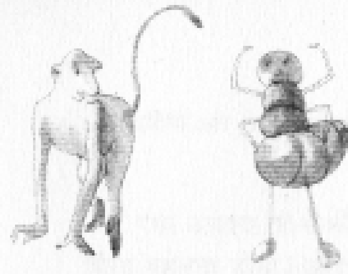
"नहीं, नहीं, नहीं," गोल्डी ने कहा। "अगर तुम उसकी नाक पर काटोगे तो उसे नाराज़ कर दोगे, और वह इस पूरे इलाके पर लावा और राख बिखेर देगा। मैं आकार में सबसे बड़ा हूँ, सो मैं ही उससे कुश्ती लड़ूँगा। भाग्य ने साथ दिया तो मैं उसे पछाड़ दूँगा।"

"नहीं, नहीं, नहीं," ओपल ने हस्तक्षेप किया। "दर्पण के तुम्हारे कठोर अनुभव ने तुम्हें कमज़ोर कर दिया है। आकार में तुम्हारे बाद मैं सबसे बड़ी हूँ। यह बिलकुल साफ है कि मुझे ही दैत्य का सामना करना चाहिए।"

"ओह नहीं, नहीं," बन्दरियाजी बोली, "उम्र में मैं सबसे बड़ी हूँ, और इसका मतलब यह है कि मुझे ही दैत्य से भिड़ना चाहिए।"

"प्लीज़ बन्दरियाजी", अदिति ने अदब से टोका। "मुझे नहीं लगता कि बड़े होने का यह मतलब होता है। मेरे पास अदृश्य करने वाला चोगा है और मैं साहस की तलवार का उपयोग करना जानती हूँ। तर्क कहता है कि मुझे ही दैत्य से लड़ना चाहिए।"

"पर अदिति," शिशु शार्क ने आपत्ति की, "साहस की तलवार दैत्य को चुभाने का वही असर होगा जो उसकी नाक पर काटने का होगा। वह चीखेगा



और दहाड़ेगा और दुनिया भर के ऊपर लावा और राख उगलेगा।"

जब वे आपस में बहस कर रहे थे, तब सिरिल चुपचाप वहाँ से सरक गया था और उसने अपने पैरों पर थोड़ा-सा 'बड़ा करो' लेप मल लिया था, जो शीशी के बाहर रह गया था। जब वह वापस लौटा तो वह बन्दरियाजी जितना बड़ा हो गया था और पहले तो कोई उसे पहचान ही नहीं पाया।

"सब कुछ ठीक है," उसने सबसे कहा। "यह मैं हूँ, सिरिल। ज़रा-से लेप ने मुझे इतना बड़ा बना दिया है। और इस आकार में भी मैं अत्यधिक ताकतवर हूँ। देखो, मैं तुम्हें दिखाता हूँ।"

इतना कहकर उसने ओपल और गोल्डी को उठा लिया और कुछ फुट की दूरी पर ले जाकर धीमे से उतार दिया।

सब इतने हैरान थे कि कुछ बोल ही नहीं सके। उन्हें कतई अन्दाज़ा नहीं था कि सिरिल अपने आकार के हिसाब से इतना ज़्यादा बलवान होगा।

गोल्डी को पहले होश आया। "देखो," उसने कहा "अगर 'बड़ा करो' लेप तुम्हें ऐसा बना सकता है, तो सोचो कि मेरे ऊपर उसका क्या असर होगा। मैं तो बीस दैत्यों को पछाड़ दूँगा।"

"प्लीज़ गोल्डी, समझदारी से काम लो," सिरिल ने प्यार से कहा। "तुम पहले ही इतने विशाल हो कि 'बड़ा करो' लेप की एक छोटी-सी शीशी तुम्हें थोड़ा ही बड़ा कर सकेगी। लड़ना तो तुम्हें तब भी पड़ेगा ही, और हम दैत्य को नाराज़ करने का जोखिम नहीं ले सकते। मैं जानता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ। इससे पहले कि वह हाथ-पैर चलाए, मैं उसे फौरन दबोच लूँगा। क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं? देखो, मैं तुम्हें दिखाता हूँ।"

उसने अपनी एक टाँग आगे बढ़ाई और अपनी एक ही चिमटी से गोल्डी को दबोच लिया। गोल्डी हिल तक नहीं पाया। "ठीक है," गोल्डी ने मान लिया। "तुम बहुत ताकतवर हो। तुम दैत्य से लड़ सकते हो।"

आकार बढ़ने पर सिरिल की ताकत देख सभी यह बात मान गए। सिरिल बेहद खुश था। "ओह, शुक्रिया!" वह चीखा। "शुक्रिया! मैं सच में किसी काम आना चाहता था।"

"प्यारे सिरिल," अदिति ने उससे कहा, "दैत्य से लड़ो या न लड़ो, तुम तो हमेशा मदद करते हो और काम आते हो। पर अब क्योंकि तुम ही तुम उससे लड़ोगे, तो क्या हम सबको कोई मदद नहीं करने दोगे?"

"बेशक!" सिरिल ने जवाब दिया। "मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है। हमें दैत्य को सिर्फ हराना ही नहीं है, उससे हार भी मनवानी है ताकि वह बाद में झंझट न करे।"

"अब तक वह जो कुछ करता रहा है, उस हिसाब से तो इस बार भी वह परेशान करेगा," अदिति बुदबुदाई। "उसे हारना पसन्द नहीं है।"

"मुझे मालूम है!" सुन्दरी अचानक चीख पड़ी। "उसे वह दवा पिलानी होगी जो सिबिल ने दी है।"

"हाँ," शिशु शार्क ने सहमति जताई। "उससे वह शान्त हो जाएगा और लम्बे समय तक उसका मिज़ाज सही रहेगा।"

"उसे दवा पीने के लिए बाध्य करना मुश्किल होगा," बन्दरियाजी बुदबुदाई।

"ना, हमें यह जताना होगा कि हम नहीं चाहते कि वह दवा पी ले," ओपल ने जवाब दिया।

"मुझे एक बात सूझी है," अदिति ने अचानक उनसे कहा, "पर मुझे इसमें ओपल और शिशु शार्क की ज़रूरत होगी।"

"ठीक है," बन्दरियाजी ने कहा। "हमारे पास वक्त कम है। सूरज डूबने ही वाला है। तुम तीनों इस पर बातचीत करो। तब तक सिरिल और मैं यह हिसाब करते हैं कि उसे कितना लेप लगाना होगा।"

"हाँ," सुन्दरी बोल उठी, "और गोल्डी और मैं हौदे को तैयार कर लेते हैं और उसमें लौटते समय के लिए खाने का सामान रख लेते हैं।"

वे फौरन अपने कामों में जुट गए। शिशु शार्क, ओपल और अदिति ने आपस में फुसफुसाते हुए एक भाषण तैयार किया जो ओपल देने वाली थी।

बन्दरिया जी और सिरिल ने सावधानी से लेप के असर को मापा और तय किया कि दैत्य की गुफा में घुसने से पहले सिरिल को ठीक कितना लेप लगाना होगा।

और गोल्डी और सुन्दरी ने हौदे में अंगूर, तरबूज़ और सन्तरे रखे और उसे गोल्डी की पीठ पर बाँध दिया। इसके बाद सुन्दरी ने मिट्टी से एक बड़ा-सा घड़ा बनाया, जिसे गोल्डी ने अपनी भभकती हुई साँस से पका दिया; और उसमें उन्होंने रास्ते के लिए ताज़ा पानी भर लिया।

सूर्य डूबने का समय हो चला था। अदिति और शिशु शार्क ओपल पर सवार थे। बाकी सब गोल्डी के साथ थे। वे निकलने ही वाले थे कि अचानक सुन्दरी को कुछ याद आया।

"अरे रुको!" वह चिल्लाई। "रुको! रुको! निकलने से पहले मुझे कुछ करना है।"





वह हड़बड़ाकर हौदे से उतरी और पहाड़ी की ढलान पर सरपट दौड़ पड़ी। शिशु शार्क उसके पीछे-पीछे गया।

"अब ये क्या कर रहे हैं?" बन्दरियाजी ने नाराज़ होते हुए कहा। "अगर ये जल्दी नहीं लौटते तो हमें देर हो जाएगी।"

"मुझे लगता है वे सिबिल को अलविदा कहने गए हैं," अदिति ने उससे कहा।

"ओह, तब तो हमें रुकना ही होगा," बन्दरियाजी ने जवाब दिया। वह व्याकुल होकर सूरज को देख रही थी, जो धीमे-धीमे अस्त होने लगा था।

सुन्दरी और शिशु शार्क सिबिल की ओर दौड़े जा रहे थे। उनके पास पहुँचकर वे धीमे हुए।

"हम अलविदा कहने आए हैं," दोनों बोल पड़े।

सिबिल उन्हें देख मुस्कुराई। "ठीक है, तो फिर अलविदा। ओह, पर सिरिल को यह कहना न भूलना कि वह दैत्य को पीठ के बल न गिरने दे। ऐसा होने पर उसकी ताकत दुगनी हो जाती है।"

जैसे ही उन्होंने उनसे विदा ली और मुड़े, सिबिल ने पीछे से पुकारकर कहा, "और देरी की चिन्ता न करना। आज शाम सूरज बड़े धीरे डूबेगा।"

और सच में, जब तक वे लौटे, सूरज ज़रा भी नहीं हिला था। दोनों ड्रैगन, चारों जाँबाज़ और शिशु शार्क दैत्य की ओर उड़ चले।

9

हार मानते हो?

जब वे ज्वालामुखी पर्वत के पास पहुँचने वाले थे, सुन्दरी ने सिरिल को बताया कि सिबिल ने क्या कहा था। सिरिल ने सिर हिलाया, "शुक्रिया। मैं सावधानी बरतूँगा। जब मैं उसे गिराऊँगा तो यह निश्चित करूँगा कि वह पेट के बल ही गिरे।" सिरिल हौदे में बन्दरियाजी के पास बैठा था और लगभग उसी के आकार का था। उन्होंने तय किया था कि वे दैत्य की गुफा में पहुँचने के बाद ही सिरिल का आकार और बड़ा करेंगे।

वे बिलकुल सही समय पर पहुँचे। वे सुरंग में दाखिल हुए और गुफा में पहुँचे। दैत्य अपनी कुर्सी पर पहले की ही तरह पसरा हुआ था।

"हो, हो, हो," उसने उनका मखौल उड़ाया। "तो तुममें से कौन शूरवीर मुझसे कुश्ती लड़ेगा?"

सिरिल ने अब अपने शरीर पर थोड़ा और 'बड़ा करो' लेप मला और आगे बढ़ा। "मैं," उसने ज़ोर से कहा।

"क्या? तुम!" दैत्य बोला। "बेसिर-पैर की बात मत करो। जब मैंने तुम्हें पहले देखा था तब से तुम कुछ बड़े लग रहे हो। पर मैं तुम्हे पैरों तले मसलकर मार सकता हूँ। तुम्हारे जैसे की चिन्ता मैं नहीं करने वाला।"

"आज़माकर देखो," सिरिल ने जवाब दिया। "मैं लगातार बड़ा होता जा रहा हूँ।"

और बेशक वह लगातार बढ़ रहा था। पहले वह दैत्य के टखने तक पहुँचता था; पर अब घुटनों तक हो गया था। उसने आगे बढ़कर दैत्य के बाएँ टखने को खींचा।

दैत्य एक कदम पीछे हटा और उसे लात मारने के लिए पैर उठाया। सिरिल ने पैर पकड़ लिया और झटके से खींचा। इससे दैत्य लड़खड़ाकर अपनी कुर्सी पर जा गिरा। अब तक सिरिल की लम्बाई दैत्य के बराबर हो चुकी थी। शिशु शार्क उनके ऊपर ही मँडराते हुए कुश्ती के दाँव-पेंच देख रहा था। उसने सिरिल को चेताया, "सिरिल, सावधान! दैत्य को पीठ के बल गिरने न देना!"



"फिक्र न करो," सिरिल चिल्लाया। "यह खास दैत्य तो मुँह के बल ही गिरेगा।"

सिरिल ने दैत्य की कुर्सी को पीछे से पकड़कर आगे की ओर गिराने की कोशिश की, पर दैत्य ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिए। सिरिल ने उसके दोनों बाजू पकड़े और उसे नीचे घसीट लिया। जैसे ही दैत्य गिरा, सिरिल ने उसे नीचे चाँप दिया। "मैं जीता," सिरिल बोला। "बोलो, हार मानते हो?"

"हाँ, मानता हूँ," भर्राई आवाज़ में दैत्य बोला।

सिरिल ने दैत्य को उठने और कुर्सी पर बैठने दिया। अब ओपल आगे बढ़ी और सिरिल का हाथ पकड़कर ऊपर उठा दिया। "सिरिल विजेता है," उसने ऐलान किया। "सिरिल चैम्पियन है। यह अमृत उसका इनाम है, जो उसे और भी ताकतवर बनाएगा।" उसने ऊपर की ओर देखा और बाकी लोगों की आँखों ने उसकी नज़रों का पीछा किया। उन्होंने देखा कि हवा में तैरती हुई एक हरी बोतल उनकी ओर चली आ रही थी। शिशु शार्क ने खुद को कुछ देर के लिए अदृश्य बना लिया था और सिबिल की दी हुई घुट्टी लेकर आगे आ रहा था।

"यह लड़ाई न्यायसंगत नहीं थी," दैत्य बड़बड़ाया। "शुरुआत के समय यह छोटा था और फिर और बड़ा, और बड़ा होता गया। अब तो वह लगभग मेरे जितना बड़ा हो गया है! यह तो ठीक नहीं है।"

"उसने कोई नियम नहीं तोड़े," ओपल ने ध्यान दिलाया।

"हो सकता है कि ऐसा हो," दैत्य भुनभुनाया, "पर अमृत की यह शीशी तो असल में मेरी ही है।"

"क्यों?" गोल्डी ने पूछा। "यह तुम्हारी कैसे हुई?"

"क्योंकि," दैत्य ने कहा, "यह तो पहले से ही ताकतवर है, और उसे इसकी ज़रूरत नहीं है।"

"मैंने उसे ईमानदारी से जीता है," सिरिल ने विरोध किया। "वह मेरी है।" उसने लपककर उस तक पहुँचने का नाटक किया।

"नहीं, उसे मत लेने दो," दैत्य चिल्लाया, "मुझे उसकी ज़रूरत है।"

"हाँ सिरिल। दैत्य को लेने दो," अदिति ज़ोर से बोली।

"हाँ, दैत्य को ही लेने दो। उसकी ज़रूरत ज़्यादा है," बन्दरियाजी ने भी सुर में सुर मिलाया।

अब तक शिशु शार्क बोतल दैत्य की पहुँच में ले आया था। यह देखकर कि कुछ लोग उसका साथ दे रहे हैं, दैत्य ने मौका लपक लिया, बोतल झपटी, जल्दी से खोली और एक बड़े घूँट में ही पूरी दवा पी ली।

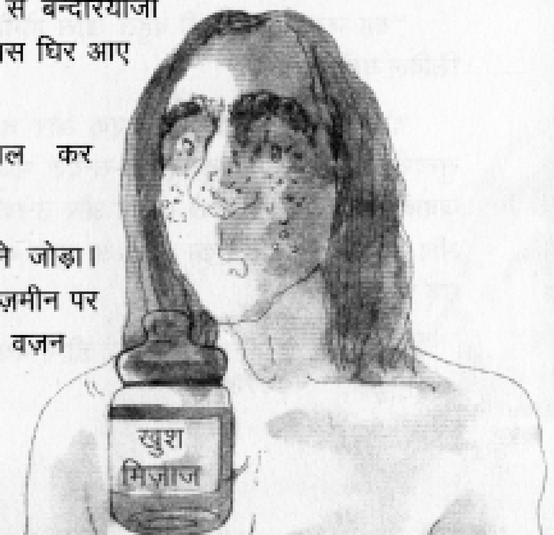
"लो," दैत्य ने सन्तोष भरी मुस्कान के साथ कहा, "भले ही मैं जीता नहीं, पर इनाम तो मुझे ही मिला है!"

"सो तो है!" ओपल बुदबुदाई।

अपनी कुर्सी में बैठे खर्राटे भरते दैत्य को छोड़कर वे निकल आए; उसके चेहरे पर सन्तोष भरी मुस्कान अब भी चिपकी हुई थी। जब वे सुरंग पार कर रहे थे उस समय सिरिल का आकार घटने लगा और जब तक वे बाहर की ताज़ी हवा में आए, वह फिर से बन्दरियाजी जितना हो गया। सब उसके पास घिर आए और उसे बधाइयाँ देने लगे।

"वाह तुमने तो कमाल कर दिखाया," शिशु शार्क ने कहा।

"हाँ, सच में," अदिति ने जोड़ा। "तुमने दैत्य को ऐसे झटके से ज़मीन पर पटक दिया मानो उसका कोई वज़न ही न हो।"





"ओह, वह तो कुछ भी नहीं था," सिरिल ने विनम्रता से कहा। "दरअसल अपने आकार के हिसाब से मैं सच में बहुत ताकतवर हूँ।"

"वह तो तुम हो," ओपल और गोल्डी बुदबुदाए।

चारों जाँबाज़ और शिशु शार्क ड्रैगनों की पीठ पर सवार हुए और ड्रैगन उड़ चले। उन्होंने भूमध्य सागर के शान्त जल के ऊपर धीमी रफ्तार से चक्कर लगाया। उन्हें नीचे वेसुवियस ज्वालामुखी, कैप्री द्वीप और क्यूमे में पहाड़ी ढलान पर अपोलो मन्दिर के खण्डहर नज़र आ रहे थे। उन्हें लगा कि वे दैत्य के खर्राटे सुन पा रहे हैं और वे खुश थे कि कम से कम कुछ समय के लिए वह शान्त रहेगा।

"समुद्र किसी दर्पण जैसा है," ओपल ने फुसफुसाया।

"और चाहे चाँदनी रात हो या दिन का उजाला, वह कितना आकर्षक लगता है," बन्दरियाजी ने जोड़ा।

"इसी तरह से समुद्र का पानी रोशनी को थाम लेता है," अदिति ने कहा।

"इस जगह में कुछ है जिसकी वजह से यहाँ से जाने का मन नहीं करता," शिशु शार्क हौले से बोला।

"यह जगह अवश्य ही बहुत खास होगी," सुन्दरी ने जोड़ा। "आखिर सिबिल यहाँ रहती है।"

दोनों ड्रैगनों ने खाड़ी का एक और चक्कर काटा। शिशु शार्क और सुन्दरी ने सिबिल को दूरानुभूति-सन्देश भेज अलविदा कहा। उन्हें फौरन जवाब मिला, जिसमें अच्छे मौसम और उनकी सुरक्षित यात्रा का वादा था। और अब सच में लौटने का समय आ चुका था। सो वे मुड़े और घर की ओर उड़ चले।

"मुझे पता है कि वापस लौटते ही मैं क्या करने वाली हूँ," बन्दरियाजी बुदबुदाई।



"सिबिल को एक पोस्टकार्ड भेजेंगी?" सुन्दरी और शिशु शार्क ने पूछा।

"हाँ, पर मेरे ज़ेहन में यह नहीं था," बन्दरियाजी ने जवाब दिया।

"हम जहाँ गए उसका सटीक नक्शा बनाएँगी?" सिरिल ने पूछा।

"वह भी, पर मैं यह नहीं सोच रही थी," बन्दरियाजी ने कहा।

"मुझे पता है," अदिति ने कहा, "जो कुछ हुआ है आप उसका पूरा ब्यौरा लिखेंगी।"

"शायद," बन्दरियाजी बोली, "पर सबसे पहले मैं यह नहीं करूँगी।"

"आप क्या करने वाली हैं?" सबने जानना चाहा।

"मैं हौदे को ठीक करूँगी ताकि उसमें पीने के पानी के लिए एक खाना और खाने का सामान रखने के लिए एक अलग खाना हो," बन्दरियाजी ने दृढ़ता से कहा।

"वाह, कितना अच्छा विचार है!" सबने हामी भरी।



अदिति और उसके दोस्त ओपल पर सवार इटली की ओर उड़ चले…

आइसलैंड
नॉर्वेजियन सागर
उत्तर अटलांटिक महासागर
आयरलैंड
यूनाइटेड किंगडम
उत्तरी सागर
डेनमार्क
नॉर्वे
स्वीडन
फिनलैंड
रूस
लिथुएनिया
बेलारूस
पोलैंड
जर्मनी
चेक गणतंत्र
स्लोवाकिया
यूक्रेन
फ्रांस
स्विट्जरलैंड
ऑस्ट्रिया
हंगरी
रोमा
क्रोएशिया
बोस्निया और हर्जेगोविना
इटली
बुल्गा
काला सागर
पुर्तगाल
स्पेन
तुर्की
भूमध्य सागर

…माउंट वेसुवियस, क्यूमे और कैप्री के लिए



अदिति की साहस कथाएँ



अद्‌भुत दोस्त

अदिति और एक आँख वाली बन्दरिया

अदिति और टेम्स नदी का ड्रैगन

अदिति और समुद्री संन्यासिन

अदिति और विज्ञानी संन्यासिन

साहसिक कथाओं के पहले सेट में अदिति, बन्दरियाजी, सिरिल चींटा व सुन्दर हथिनी गोल्डी और ओपल नाम के दो ड्रैगनों से दोस्ती करते हैं। वे तीन संन्यासिनों की मदद हासिल करते हैं और बदले में उनकी सहायता भी करते हैं। जो चुनौतियाँ उनके सामने पेश आती हैं उनमें केवल उनकी कुशलता और चतुरता के बल पर शत्रुओं से लड़ने की ही बात नहीं है। उन्हें बहुत-से सवालों पर भी सोचना होता है: अपने से शक्तिशाली मगर अविवेकी किसी जीव से निपटने का सर्वोत्तम तरीका क्या है? किसी असली और नकली ड्रैगन में क्या फर्क होता है? किसी से सचमुच की लड़ाई किए बगैर ही समस्याएँ सुलझाना भी क्या कोई साहसिक कार्य हो सकता है? उन्हें क्या होता होगा जो यह तो याद रख पाती हैं कि क्या हुआ था मगर घटनाओं का क्रम याद नहीं रख पातीं?

अगर आप सवाल पूछना पसन्द करने वालों में से हैं, तो इन किताबों में आपको ज़रूर मज़ा आएगा।

अनपेक्षित दैत्य

अदिति और उसके दोस्तों ने किया ज्वालामुखी दैत्य का सामना

अदिति और उसके दोस्तों की ग्रेण्डेल से मुलाकात

अदिति और उसके दोस्तों ने की बुडापेस्ट की बहुरूपिया की मदद

अदिति और उसके दोस्त शेमीक की तलाश में

साहसिक कथाओं के इस दूसरे सेट में अदिति और उसके दोस्तों का यूरोप के विविध हिस्सों में मिथकों व किंवदन्तियों के अनेक किरदारों से सामना होता है, जो अनपेक्षित और कभी-कभी तो खतरनाक व्यवहार करते हैं। क्यूमे का सिबिल मददगार बन जाता है। ग्रेण्डेल दैत्य बस एक बच्चा है; वह हर रोज़ भूल जाता है कि पिछले दिन क्या-कुछ हुआ था। बुडापेस्ट की बहुरूपिया को जैसा समझा जाए वह वैसी हो जाती है। और वाइशेरड के सफेद घोड़े समझदार शेमीक को बन्दरियाजी की मदद करनी है जिस पर कोई ऐसा जादू कर दिया गया है कि वह झूठ बोले बगैर कुछ बोल ही नहीं सकती। सवाल उठते हैं: ताकत क्या है? साफ-साफ देखना क्या है? आप क्या हैं, क्या यह इस पर निर्भर है कि आप पहले क्या थे? क्या यह इस पर भी निर्भर है कि दूसरे आपको कैसे देखते हैं? अगर आपको केवल झूठ ही बोलना हो तो क्या आप कोई भी संवाद कर सकते हैं? चार जाँबाज़ दोस्त और दो ड्रैगन हर चुनौती का सामना करते हैं और एक-दूसरे के और बेहतर दोस्त बन जाते हैं।

अगर आप चीज़ों के बारे में सोचना पसन्द करते हैं तो ये साहस कथाएँ आपको ज़रूर भाएँगी।

एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्कः ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 016 (मध्य प्रदेश)
ईमेलः books@eklavya.in

गोल्डी गुम हो गया है! इस सुराग का पीछा करते हुए कि गोल्डी को एक नीली कन्दरा के बीच में छलाँग लगाते हुए देखा गया है, ओपल पर सवार होकर अदिति और उसके दोस्त क्यूमे के खूबसूरत पहाड़ी इलाके में पहुँचते हैं। उनकी खोज उन्हें सिबिल, जो सब कुछ जानती है, एक जादुई दर्पण, और भूकम्प पैदा करने वाले, लावा उगलने वाले बदमिज़ाज ज्वालामुखी दैत्य से मिलाती है।

अदिति की साहसिक कथाएँ बच्चों को हर बार दुनिया के किसी नए स्थान की सैर कराती हैं। यह पाँचवीं कथा इटली के नज़दीक कैप्री के आसपास घटती है। मगर, अदिति की अन्य साहस कथाओं की तरह, इस किताब का चिरस्थाई आकर्षण भी उसकी परतदार गहराइयों में, सच्ची दोस्ती की सौम्य परख में, असली ताकत और करुणा के बल में है।

सुनीति नामजोशी की पहली पुस्तक *फ़ेमिनिस्ट फ़ेबल्स* 1981 में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें कविता संग्रह भी शामिल हैं। वे डेवन, यू.के. में रहती हैं।

शेफाली जैन चित्रकार हैं जो गुजरात के वडोदरा शहर में रहकर काम करती हैं। वे काफी समय से बच्चों की किताबों के लिए चित्रांकन भी करती रही हैं। इनमें से कुछ हैंः अन्वेषी द्वारा विकसित *मदर* (लेखकः कांचा आइलैया), तूलिका द्वारा प्रकाशित *दस* (हिन्दी-अँग्रेज़ी) जिसका लेखन भी शेफाली ने ही किया है, और यह अदिति शृंखला। एकलव्य की बाल पत्रिका *चकमक* में भी उनका सक्रिय योगदान है।